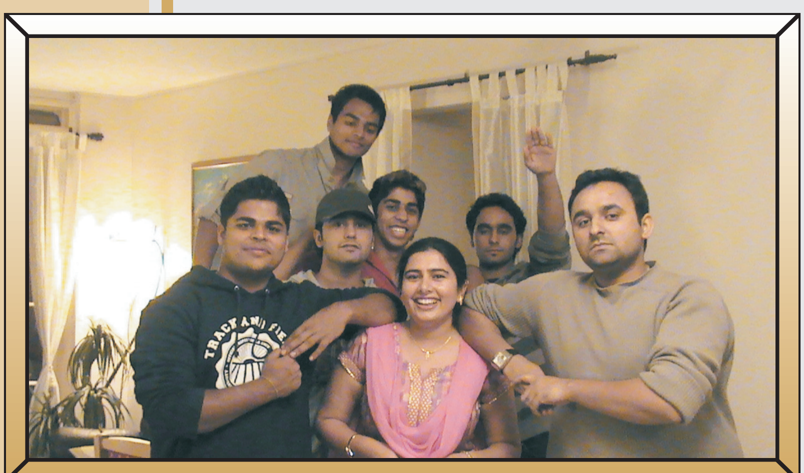


स्पंदन

Vibrations



विजय कुमार सिंह

स्पंदन

Vibrations

"गीत एवं कविता संग्रह"

◆

विजय कुमार सिंह

एम०ए० (हिन्दी), एल-एल०बी०

श्रम प्रवर्तन अधिकारी, श्रम विभाग, उत्तर प्रदेश

अमर निवास, पुलिस लाइन्स रोड

बुलन्दशहर - 203 001, उत्तर प्रदेश, भारत.

E-mail : vksingh52@hotmail.com

आमुख : बड़गोती परिवार

प्रथम संस्करण - 2010

प्रकाशक एवं मुद्रक :

अखिल पब्लिशर्स एण्ड प्रिन्टर्स

11, प्रथम तल, जिला परिषद् मार्केट, कोर्ट रोड, काला आम,
बुलन्दशहर - 203 001, उत्तर प्रदेश, भारत.
मोबाइल : +91-9412744467.



पूज्य पिता

स्व० महेन्द्रपाल सिंह

(मार्च 15, 1928 – जुलाई 30, 1988)

को समर्पित

Blank

यह पेज कोरा रखना है

वन्दना

यस्योन्मेषनिमेषाभ्यां जगतः प्रलयोदयौ ।
तं शक्तिचक्रविभवप्रभवं शङ्करं स्तुमः ॥

हम उस अनुग्रहमूर्ति शंकर ('शम्' - कल्याण + 'कर' - करने वाला) को प्रणाम करते हुए, उसी स्वरूप में समाविष्ट हो जाते हैं, जिसके उन्मेष-निमेष-मात्र (संकल्पात्मक स्फुरणा-मात्र) से ही सारे जगत् की सृष्टि और संहार की क्रीडा सम्पन्न हो जाती है और जो शक्तिचक्र के वैभव (विश्ववैचित्र्य के अनन्त रूपों में प्रवहमान एक ही स्पन्दशक्ति की अनन्त धाराओं के संयोजन और वियोजन की स्वतन्त्र क्रीडा) का मूल कारण है ॥ *स्पन्दसूत्र-1*

वसुगुप्त
(800-900 ई०)

आभार

नमन[1] उस विराट्[2] को, जिसकी सत्ता[3] अपरिमित[4],
नमन उस राष्ट्र[5] को, जिसकी समृद्ध[6] संस्कृति[7] ।
नमन उस जननी[8] को, जिससे जीवन स्पन्दित[9],
नमन उस संगिनी[10] को, जिससे जीवन आनन्दित[11] ।।

नमन उस बन्धुता[12] को, जिससे मनुज[13] अर्थान्वित[14],
नमन उस मित्रता[15] को, जिससे मनुज लाभान्वित[16] ।
नमन उस भविष्य[17] को, जिससे मनुज आशान्वित[18],
नमन उस कृतित्व[19] को, जिससे मनुज गौरवान्वित[20] ।।

1. नमस्कार, प्रणाम, अभिवादन ; 2. विश्व शरीरमय अनन्त पुरुष, ब्रह्मा का वह स्थूल स्वरूप जिसके अन्दर अखिल विश्व है अर्थात् विश्व जिसका शरीर है ; 3. अस्तित्व, हस्ती, प्रभुत्व, शक्ति, सामर्थ्य ; 4. जो सीमित न हो, असीमित ; 5. देश, राज्य ; 6. धनवान, सशक्त, प्रभावशाली, अधिक, बहुत ; 7. परिष्कृत संस्कार, आचरणगत परम्परा, अलंकृत करना या सजाना ; 8. माँ, माता ; 9. स्पंदनयुक्त, प्रस्फुरित, गतिमय, बुद्धि या मन की क्रियात्मकता ; 10. भार्या, परिणीता, पत्नी ; 11. प्रसन्नता, खुशी, सन्तुष्ट, प्रफुल्लित; 12. भाई, भ्राता, आत्मीय व्यक्ति, बंधुत्व ; 13. मनुष्य ; 14. सारगर्भित, धनी, महत्वपूर्ण ; 15. दोस्ती ; 16. लाभ हुआ, लाभ में प्राप्त ; 17. आने वाला कल ; 18. उम्मीद, प्रत्याशा ; 19. किया गया कार्य ; 20. महिमा से युक्त ।

विजय कुमार सिंह
(30-04-2010)
बुलन्दशहर

अनुक्रमणिका

1. शक्ति भर माँ, शक्ति भर......

शक्ति भर माँ, शक्ति भर,
शक्ति भर माँ, शक्ति भर ।

शब्द नव[1], नव बन्ध[2] भर,
ताल[3] नव, नव छन्द[4] भर ।
भाव[5] नव, नव लय[6] ललित[7],
अनुपम[8] अमित[9] स्वर[10] रंग भर।

शक्ति भर माँ, शक्ति भर,
शक्ति भर माँ, शक्ति भर ।

स्वप्न[11] नव, नव राग[12] भर,
स्फूर्ति[13] नव, नव आग भर ।
अभिलाष[14] नव, नव शुभ्[15] मनस्[16],
उत्कट[17] अमिट[18] विश्वास भर ।

शक्ति भर माँ, शक्ति भर,
शक्ति भर माँ, शक्ति भर ।

धैर्य[19] नव, नव मर्ष[20] भर,
आह्लाद[21] नव, नव हर्ष[22] भर,
उत्साह नव, नव चित्[23] विमल[24],
निर्विकल्प[25] निर्मल[26] दर्श[27] भर।

शक्ति भर माँ, शक्ति भर,
शक्ति भर माँ, शक्ति भर ।

ज्योति[28] नव, नव गतिज[29] भर,
संम्भाव्य[30] नव, नव क्षितिज[31] भर।
बोध[32] नव, नव प्राण-तनु[33],
सरस[34] सुरमण्य[35] सुरभि[36] भर ।

शक्ति भर माँ, शक्ति भर,
शक्ति भर माँ, शक्ति भर ।

1. नया, नवीन, नूतन ; 2. पद रचना, व्यवस्था, बंधन ; 3. संगीत में नियत मात्राओं पर हथेली से उत्पन्न किया जाने वाल शब्द ; 4. मात्राओं का निश्चित मान जिसके अनुसार पद्य रचना की जाती है ; 5. भावना ; 6. गति, सामंजस्य, गाने का प्रकार ; 7. मनोहर, सुंदर, कोमल ; 8. बेजोड़, उपमा रहित ; 9. बेहद, जो मापा न जा सके ; 10. आवाज़ ; 11. सपना ; 12. अनुराग, प्रेम, विशिष्ट गान प्रकार ; 13. फुरती, तेजी ; 14. इच्छा, कामना ; 15. कल्याणकारी ; 16. मन ; 17. तीव्र, उग्र, प्रबल ; 18. न नष्ट होने वाला ; 19. धीरज, चित्त की दृढ़ता, स्थिरता, सब्र ; 20. सहनशीलता, क्षमा ; 21. प्रसन्नता, हर्ष, खुशी ; 22. प्रसन्नता ; 23. चेतना ; 24. मल रहित, बिना दोष के ; 25. निश्चल, स्थिर ; 26. दोष रहित, बिना मल के ; 27. दर्शन, प्रत्यक्ष प्रमाण ; 28. प्रकाश, उज़ाला ; 29. गति से उत्पन्न हुआ ; 30. हो सकने योग्य, कल्पनीय ; 31. जहाँ पृथ्वी और आकाश मिलते दिखायी देते हैं, दृष्टिसीमा ; 32. जानकारी, ज्ञान ; 33. जान और शरीर ; 34. रसीली ; 35. सुन्दर, मनोहर ; 36. खुशबू, सुगन्ध ।

(14-09-2009)
बुलन्दशहर

2. कोटि कण्ठ निनाद एक स्वर......

कोटि[1] कण्ठ[2] निनाद[3] एक स्वर[4],
स्वर चतुर्दिश[5] ध्वनित[6] प्रति स्वर[7]।

शुभदायिनी[8], सुखदायिनी[9],
वरदायिनी[10], फलदायिनी[11]।
वन्दे-मातरम्[12], वन्दे-मातरम्,
वन्दे-मातरम्, वन्दे-मातरम्।

शुभ्र[13] हिमगिरि[14] मुकुट[15] मस्तक[16],
नीलिमामय[17] जलधि[18] पदतल[19]।
सरित[20] कुंचित[21] केश[22] गुंफित[23],
बह रहे कर नाद[24] कल-कल।

शुभदायिनी, सुखदायिनी,
वरदायिनी, फलदायिनी।
वन्दे-मातरम्, वन्दे-मातरम्,
वन्दे-मातरम्, वन्दे-मातरम्।

निर्झरों[25] का नीर[26] झर-झर,
पंक्षियों[27] का मधुर[28] कलरव[29]।
अनत[30], आनंदित[31], सुगंधित[32],
झूमते भर पुष्प[33] तरुवर[34]।

शुभदायिनी, सुखदायिनी,
वरदायिनी, फलदायिनी।
वन्दे-मातरम्, वन्दे-मातरम्,
वन्दे-मातरम्, वन्दे-मातरम्।

स्वर्ण[35] किरणों का लास्य[36] चंचल[37],
ज्योत्सना[38] स्निग्ध[39] निर्मल[40]।
शान्त[41] शीतल[42] शुभ[43] प्रहर्षित[44],
मलयानिल[45] पावन[46] अनवरत[47]।

शुभदायिनी, सुखदायिनी,
वरदायिनी, फलदायिनी ।
वन्दे-मातरम्, वन्दे-मातरम्,
वन्दे-मातरम्, वन्दे-मातरम् ।

ऋतु[48] सजाएँ वेश[49] अविरल[50],
विविध[51] रंग मधुसिक्त[52] आँचल ।
धन्य हो माँ, हो अनुपमित[53],
गा रहा हर श्वास[54] प्रतिपल[55]।

शुभदायिनी, सुखदायिनी,
वरदायिनी, फलदायिनी ।
वन्दे-मातरम्, वन्दे-मातरम्,
वन्दे-मातरम्, वन्दे-मातरम् ।

1. करोड़ों ; 2. गला ; 3. ज़ोर की आवाज़ ; 4. आवाज़ ; 5. चारों दिशाओं से, चारों ओर से ; 6. आवाज़ ; 7. प्रतिध्वनि, गूँज ; 8. कल्याण देने वाली ; 9. सुख देने वाली ; 10. वरदान देने वाली 11. उद्देश्य की सिद्धि करने वाली 12. माँ का वदंन, माँ को प्रणाम 13. सफेद, श्वेत ; 14. हिमालय पर्वत ; 15. ताज ; 16. माथा, ललाट, सिर ; 17. नीले रंग से भरा ; 18. सागर, समुद्र ; 19. पैरों तले ; 20. नदी ; 21. घुँघराला ; 22. बाल ; 23. गूँथा हुआ, सजाया हुआ, गुच्छित ; 24. आवाज़ ; 25. झरने ; 26. पानी, जल ; 27. चिड़ियाँ ; 28. प्रिय, मीठा ; 29. मधुर स्वर ; 30. न झुका हुआ, सीधा ; 31. प्रसन्न, हर्षित ; 32. खुशबू से भरा ; 33. फूल ; 34. पेड़ ; 35. सोना ; 36. नाच, नृत्य ; 37. चुलबुला ; 38. चन्द्रमा का प्रकाश, पृथ्वी पर छिटकी चाँदनी ; 39. ठंडा करने वाला, चिकना, सौम्यता, आर्द्रता, स्नेहयुक्त, प्रेममय ; 40. मल रहित; 41. मौन, चुप, निःशब्द ; 42. ठंडी ; 43. कल्याणकारी ; 44. अत्यधिक प्रसन्नता ; 45. मलय (केरल प्रांत में) पर्वत पर बहने वाली हवा ; 46. पवित्र, शुद्ध ; 47. लगातार, अविराम ; 48. मौसम ; 49. वेशभूषा, पहनावा ; 50. लगातार ; 51. विभिन्न प्रकार का ; 52. शहद से भीगा हुआ ; 53. बेजोड़, जिसकी उपमा न दी गई हो ; 54. साँस ; 55. हर एक पल ।

(01-05-2009)
बुलन्दशहर

3. विश्व रचयिता तेरी कृति में.......

विश्व[1] रचयिता[2] तेरी कृति[3] में,
आर्तनाद[4] और क्रंदन[5] क्यों है ?
सत्य उपेक्षित[6] क्यों है इतना
असत्[7] का यह अभिनंदन[8] क्यों है ?

नये-नये नित[9] रूप बनाकर,
छलती है आ मृगतृष्णाएँ ।[10]
मन टूटे और फिर पीड़ा[11] हो,
नयना[12] अविरल[13] नीर[14] बहाएँ।

क्यों सुख दूर खड़ा है इतना,
दु:ख का यह आलिंगन[15] क्यों है ?
सत्य उपेक्षित क्यों है इतना,
असत् का यह अभिनंदन क्यों है ?

भरे हुए धन-धान्य[16] कहीं पर,
सजे हुए हैं घर चौबारे[17] ।
कहीं कोई पिंजर[18] कृश[19] काया[20],
कातर[21] स्वर[22] में हाथ पसारे[23]।

कहीं अवसाद[24] भरे सूखे मुख,
कहीं प्रफुल्लित[25] आनन[26] क्यों है ?
सत्य उपेक्षित क्यों है इतना,
असत् का यह अभिनंदन क्यों है ?

ज्योतिर्मय[27] स्वरूप[28] है तेरा,
फिर क्यों अंधकार सा छाया ?
मानव ही मानव से कहता,
वह है अपना वह है पराया ।

नेह[29] भाव क्यों हुआ तिरोहित[30],
घृणा[31] का यह स्पंदन[32] क्यों है ?
सत्य उपक्षित क्यों है इतना,
असत् का यह अभिनंदन क्यों है ?

एक ही तू और एक तू ही बस,
फिर क्यों नफरत की दीवारें ?
ह्रदय[33] भरे प्रतिशोध[34] की ज्वाला[35],
एक दूजे को हम क्यों निहारें[36]?

सीमाबद्ध[37] जगत्[38] है माना,
पर सीमा का वंदन[39] क्यों है ?
सत्य उपेक्षित क्यों है इतना,
असत् का यह अभिनंदन क्यों है ?

1. संसार, दुनियाँ ; 2. निर्माण करने वाला, बनाना, रचना करने वाला ; 3. किया हुआ कार्य, रचना ; 4. दर्द भरी पुकार, गुहार ; 5. विलाप करना, रोना ; 6. तिरस्कृत, अनादृत, उदासीन ; 7. मिथ्या, बुरा, अनुचित ; 8. अभिवादन, सराहना, बधाई, स्वागत ; 9. प्रतिदिन, हर रोज, हर समय, हमेशा ; 10. मृग, मरीचिका, ऐसी तृष्णा जो प्राय: सम्भव न हो ; 11. तकलीफ, वेतदना ; 12. आँखे ; 13. लगातार ; 14. आँसू, पानी ; 15. गले लगाना, परिरंभण ; 16. धन-दौलत एवं खाद्य पदार्थ ; 17. वह कमरा जिसके चारों ओर दरवाजे या खिड़कियाँ या दोनो हों ; 18. पीला ; 19. दुबला-पतला, कमजोर; 20. शरीर, देह ; 21. परेशान, व्याकुल, भयभीत ; 22. आवाज़ ; 23. फैलाए, (दीनतापूर्वक माँगना) ; 24. हार, खेद ; 25. खिला हुआ, हँसता हुआ ; 26. मुँह, चेहरा, मुख ; 27. जगमगाता हुआ, अत्यन्त प्रकाशवान ; 28. अपनी आकृति, अपनी विशेषता, स्वभाव, प्रकार ; 29. प्रेम भाव, मुहब्बत, प्रेम ; 30. अदृश्य, ढ़का हुआ, छिपा हुआ ; 31. नफ़रत ; 32. कंपन, काँपना ; 33. दिल, मन ; 34. बदला लेने की इच्छा, प्रतिकार ; 35. आग की लपट, 36. देखना ; 37. सीमा निश्चित की गई ; 38. संसार, दुनियाँ ; 39. वंदना, स्तुति ।

(17-04-2009)
बुलन्दशहर

4. सपना सुनहरा सा.......

सपना सुनहरा सा, आँखों में बसा लेना,
कभी-कभी यादों में, हमें भी बुला लेना ।

सूनी-सूनी रातों में, निंदिया न आएगी,
जागी-जागी आँखों में, सारी रात जाएगी ।

हम भी वहीं होंगे, हमें भी जगा लेना,
कभी-कभी यादों में, हमें भी बुला लेना ।

कभी-कभी ऐसे ही, रोने का मन होगा,
उलझन सी कोई, ढीला सा तन होगा ।

आँसू बहें जो तेरे, हमें भी रुला लेना,
कभी-कभी यादों में, हमें भी बुला लेना ।

महफ़िल में होगे तो जाने अजाने होंगे,
बाते नई होंगी, किस्से पुराने होंगे ।

अपनी जो छेड़ो तो, हमें भी सुना लेना,
कभी-कभी यादों में, हमें भी बुला लेना ।

होगे जहाँ वहीं, खुशी चली आएगी,
साज भी वहीं होंगे, गीत भी वो गाएगी ।

नाचो जो मस्ती में, हमें भी नचा लेना,
कभी-कभी यादों में, हमें भी बुला लेना ।

(22-04-2009)
सिडनी/बुलन्दशहर

5. प्रिय के आगमन में......

प्रिय के आगमन[1] में क्या, कुछ समय ही शेष[2] है ?
दिवस[3] नहीं, पहर[4] नहीं, क्या बचे निमेष[5] हैं ?

कौतूहल[6] भरे हुए, बाट[7] में निहारती[8],
आएँगे वे कब तलक, आँखें अब पुकारतीं ।

रूप क्या है ? रंग क्या ? कैसा उनका वेश[9] है?
प्रिय के आगमन में क्या, कुछ समय ही शेष है ?

पुष्प[10] पर्ण[11] बाँध कर, द्वार[12] को सजाती में,
द्वार के ही सामने, रँगौली[13] बनाती में ।

एक ही तो द्वार है, एक ही प्रवेश[14] है,
प्रिय के आगमन में क्या, कुछ समय ही शेष है ?

उनके दोनों पाँवों को, मैं स्वयं पखारूँगी[15],
धूप[16], पुष्प[17], दीप[18] ले, आरती उतारूँगी ।

आ रहे है पहली बार, कार्य[19] कुछ विशेष है,
प्रिय के आगमन में क्या, कुछ समय ही शेष है ?

स्वयं[20] को भी निहार[21] लूँ, छवि[22] मैं देखूँ कर्म[23] की,
अमिट[24] लकीरें खिंच रहीं, पाप[25] की दुष्कर्म[26] की ।

हाय अब मैं क्या करूँ, अब तो सब निःशेष[27] है,
प्रिय के आगमन में क्या, कुछ समय ही शेष है ?

1. आना, पहुँचना ; 2. बचा हुआ, बाकी ; 3. दिन ; 4. तीन घंटे का समय ; 5. एक बार पलक झपकने में लगा समय ; 6. उत्सुकता ; 7. रास्ता ; 8. देखना ; 9. पहनावा ; 10. फूल ; 11. पत्ता ; 12. दरवाजा ; 13. फर्श पर अनेक रंगों से बनाया गया चित्र, रंगवली ; 14. अंदर जाना ; 15. पानी से साफ करना ; 16. घूनी ; 17. फूल ; 18. दीपक ; 19. काम ; 20. खुद ; 21. देखना, ताकना ; 22. तस्वीर, चित्र, शोभा ; 23. काम, क्रिया ; 24. न मिटने वाला, अटल ; 25. धर्म एवं नीति के विरूद्ध किया जाने वाला कार्य, गुनाह ; 26. अनुचित एवं निंदनीय कार्य ; 27. जिसमें कुछ भी न बचा हो, समाप्त ।

(10-08-2009)
बुलन्दशहर

6. थोड़ी मुझे भी पीने दे,.......

थोड़ी मुझे भी पीने दे,
थोड़ा मुझे भी जीने दे ।

मैं भी जरा सा झूम लूँ,
बहते पवन[1] संग घूम लूँ ।
उड़ जाऊँ मैं भी पंख धर,
मैं भी गगन[2] को चूम लूँ।

थोड़ी मुझे भी पीने दे,
थोड़ा मुझे भी जीने दे ।

देखूँ कि है उस पार क्या,
होता वहाँ व्यापार[3] क्या ?
वर कौन सा देती प्रकृति[4],
देती वहाँ उपहार[5] क्या ?

थोड़ी मुझे भी पीने दे,
थोड़ा मुझे भी जीने दे ।

मैं भी तो खुद को जान लूँ,
मैं कौन क्या ? पहचान लूँ ।
मैं तेरा ही प्रतिभास[6] हूँ,
इसे यूँ ही कैसे मान लूँ ।

थोड़ी मुझे भी पीने दे,
थोड़ा मुझे भी जीने दे ।

कल आज और फिर आजकल,
बँधा श्रृंखला[7] में पल से पल।
भर या तो मुझमें पूर्णता[8],
या शून्यता[9] भर दे सकल[10] ।

थोड़ी मुझे भी पीने दे,
थोड़ा मुझे भी जीने दे ।

1. हवा, वायु ; 2. आकाश, आसमान ; 3. काम-धंधा, उद्योग, काम ; 4. वह मूल तत्व जिसका परिणाम जगत है, चराचर संसार, 5. भेंट, सौगात ; 6. आभास, भ्रम ; 7. कतार, श्रेणी क्रम 8. हर प्रकार से तृप्त और संतुष्ट, पूर्णतः भरा हुआ ; 9. अस्तित्वहीन, खाली, शून्य होने का भाव ; 10. समस्त, कुल ।

(15-08-2009)
सिडनी/बुलन्दशहर

7. यहीं से गुजरते है.......

यहीं से गुजरते हैं, मौसम हसीन,
मेरे मन ठहर जा, यहीं पर कहीं ।

फैली है नभ[1] में, नीली सी चादर,
हिम[2] के शिखर[3] ये, योगी से अविचल[4] ।

बड़ी दूर तक, झिलमिलाती नदी,
मेरे मन ठहर जा, यहीं पर कहीं ।

फूलों भरे हैं, बाग और बगीचे,
हरी घास के ये, मुलायम गलीचे[5] ।

रंगों भरी तितलियाँ उड़ रहीं,
मेरे मन ठहर जा, यहीं पर कहीं ।

खुशबू भरी इन, हवाओं की सर-सर,
सभी झूमते हैं, लता[6], गुल्म[7], तरुवर[8]।

चिड़ियाँ फुदक, चहचहाती कहीं,
मेरे मन ठहर जा, यहीं पर कही ।

काली कोयलिया, कुह कुह सुनाए,
मस्ती में भँवरा, यही गुनगुनाए ।

जन्नत[9] कहीं है, तो है फिर यहीं,
मेरे मन ठहर जा, यहीं पर कहीं ।

1. आकाश, गगन ; 2. बर्फ ; 3. चोटी, सिर ; 4. अचल, स्थिर ; 5. मोटी चादर ; 6. कोमल शाखा, 7. झाड़ी ; 8. पेड़, वृक्ष ; 9. स्वर्ग ।

(20-08-2009)
बुलन्दशहर

8. इश्क क्या है, आग-ए-दरिया.......

इश्क क्या है, आग-ए-दरिया[1] में उतर जाना सा,
हुस्न क्या है, किन्ही आँखों में सँवर जाना सा ।

रात दिन उनके तसव्वुर[2], में रहा करते हम,
कोई रिंद[3] कह के पुकारे, कोई दीवाना सा ।

मुझको भी अपना समझकर, कभी वो देंगे सदा[4],
या तो ये है कोई सपना, या है अफ़साना सा ।

वो क्या पूछेंगे कभी, आ के तबीअत मेरी,
जिनको हर बार में लगता हूँ, अनजाना सा ।

क्या कहूँ किससे कि कैसी, है गुज़रती मुझ पर,
कभी जलता हूँ शमा बन, कभी परवाना सा ।

मेरा वजूद[5] भी क्या है, क्या है शख्सियत[6] मेरी,
किसी जुगनूँ सा चमकना, और बुझ जाना सा ।

1. नदी ; 2. ध्यान, कल्पना ; 3. शराबी ; 4. आवाज़, पुकार ; 5. अस्तित्व, सत्ता ; 6. व्यक्तित्व ।

(22-08-2009)
बुलन्दशहर

9. अभी भी वक्त है,......

अभी भी वक्त है, अब भी कहाँ की देरी है,
जोश भर के तू चला चल, ये राह तेरी है ।
अभी भी राह में कितने ही कारवाँ होंगे,
आगे बढ़ते हुए पैरों के भी निशान होंगे ।
ये नया भोर है, ना रात ये अंधेरी है,
जोश भर के तू चला चल, ये राह तेरी है।
ये नयी सुबह, तेरा इंतजार करती है,
राह की धूल भी तो, तुझसे प्यार करती है।
खिलते फूलों ने भी, अपनी छटा[1] बिखेरी है,
जोश भर के तू चला चल, ये राह तेरी है ।
अभी तो आगे भी, कई और मुकाम बाकी हैं,
अभी तो और भी, कई इम्तिहान बाकी हैं ।
यहाँ कोशिश की सदा, कामयाबी चेरी[2] है,
जोश भर के तू चला चल, ये राह तेरी है।
जो सच की राह पर, जितना निसार[3] होता है,
उसी से खुदा को भी, उतना प्यार होता है।
सब करम है उसी का, और दुआ[4] भी मेरी है,
जोश भर के तू चला चल, ये राह तेरी है ।

1. शोभा, छवि, चमक ; 2. नौकरानी, दासी ; 3. निछावर, कुर्बान ; 4. प्रार्थना।

(23-08-2009)
बुलन्दशहर

10. खोल अपने द्वार, ओ मन्......

खोल अपने द्वार, ओ मन्,
देख अपने पार, ओ मन् ।

है वही नभ[1] नीली चादर,
है हरित[2] भी भू[3] का आँचल।
ऊँचे-ऊँचे गिरि[4] वही हैं,
गहरे यह सागर[5] वही हैं ।

हैं वही चन्दा-ओ-तारे,
हैं वही साँझ-ओ-सकारे[6] ।
रात भी ढ़लती वही है,
दिन निकलता भी वही है ।

है शरद[7] हेमन्त[8] वह ही,
है शिशिर[9]-ओ-बसन्त[10] वह ही।
जा चुकी झुलसाती गर्मी,
पड़ रही बौछार[11], ओ मन् ।

खोल अपने द्वार, ओ मन्,
देख अपने पार, ओ मन् ।

हैं वही यमुना के धारे,
हैं वही गहरे किनारे ।
झील और सरवर[12] वही हैं
पौधे और तरुवर[13] वही हैं ।

हैं वही अब भी सघन वन,
है वही वृन्दा[14], महावन[15] ।
पुष्प[16] और कलियाँ वही हैं,
राह और गलियाँ वहीं हैं ।

है वही चिड़ियों का कलरव[17],
है वही कोकिल[18] मधुर स्वर।
पीहू-पीहू बोले पपीहरा[19],
चल रही है बयार, ओ मन् ।

खोल अपने द्वार, ओ मन्,
देख अपने पार, ओ मन् ।

है वही कँगने की खन-खन,
है वही पायल की छम-छम।
चोली और चूनर वही है,
लँहगे का घूमर वही है ।

है वही हर्ष और पुलकन,
है वही स्पर्श कंपन ।
प्रेम की भाषा वही है,
मन की अभिलाषा वही है ।

है वही व्याकुल हुआ मन,
है वही बढ़ता हुआ क्षण ।
वंशीवट[20] नीचे आ राधा,
कर रही अभिसार[21], ओ मन्।

खोल अपने द्वार, ओ मन्,
देख अपने पार, ओ मन् ।

है वही गोकुल का प्यारा,
है वही ब्रज का दुलारा ।
हाथ में मुरली वही है,
मोर पंख कलँगी वही है ।

है वही नित[22] करता लीला[23],
है वही श्यामल छबीला ।
गोपियों का गान वह है,
राधा का अभिमान वह है ।

है वही एक सबका दाता[24],
है वही सबका विधाता[25]।
रुठो ना, रुठो ना राधा,
कर रहा मनुहार[26], ओ मन् ।

खोल अपने द्वार, ओ मन्,
देख अपने पार, ओ मन् ।

1. आकाश, आसमान ; 2. हरा ; 3. पृथ्वी, जमीन ; 4. पहाड़, पर्वत ; 5. समुद्र ; 6. शाम और सुबह ; 7. क्वार और कार्तिक माह ; 8. अगहन और पूस ; 9. माघ और फागुन ; 10. चैत्र और बैसाख ; 11. बारिश ; 12. तालाब ; 13. पेड़ ; 14. तुलसी, वृन्दावन ; 15. बहुत बड़ा और घना वन (वृन्दावन के एक वन का नाम) ; 16. फूल ; 17. मंद एवं मधुर स्वर ; 18. कोयल ; 19. पपीहा ; 20. वृंदावन में वह बरगद का पेड़ जिसके नीचे भगवान कृष्ण वंशी बजाया करते थे ; 21. प्रेमियों का मिलन स्थल ; 22. हर रोज ; 23. क्रीडा, खेल, रहस्य से भरा कार्य, 24. देने वाला, 25. सृष्टि की रचनात्मक शक्ति, विधान रचने वाला, विधान बनाने वाला ; 26. विनती, खुशामद, यत्न ।

(31-08-2009)
बुलन्दशहर

11. आ मन अन्तर दीप जला ले ....

आ मन अन्तर दीप जला ले ।

आना है क्या, जाना है क्या,
खोना है क्या, पाना है क्या ।
नित इन प्रश्नों से उलझे मन,
अपनी उलझन और बढ़ा ले ।

आ मन अन्तर दीप जला ले ।

दुर्गम है पथ, सीधा है पथ,
लम्बा है पथ, छोटा है पथ ।
जिसका मन जितना आलोकित,
वैसी ही वह राह दिखा ले ।

आ मन अन्तर दीप जला ले ।

मन अंधियारा, जग अंधियारा,
मन उजियारा, जग उजियारा ।
अपना मन ज्योर्तिमय करके,
मन जग दोनों साथ सजा ले ।

आ मन अन्तर दीप जला ले ।

सोये तो सपना, जागे तो सपना,
सच तो सपना, सपना तो सपना ।
जो जागे वह ही सच जाने,
सोते मन को आज जगा ले ।

आ मन अन्तर दीप जला ले ।

(19-09-2009)
बुलन्दशहर

12. जय हो जय माँ, जय हो जय माँ.......

जय[1] हो जय माँ, जय हो जय माँ, जय हो जय माँ, जय हो जय,
जय हो जय माँ, जय हो जय माँ, जय हो जय माँ, जय हो जय ।

नेत्रत्रियधर[2] टीका[3] मृगमद[4], दशभुजा[5] सिंहवाहिनी[6],
कर्णकुंडल[7] मुकुटमस्तक[8], उज्ज्वला[9] जगस्वामिनी[10] ।

जय हो जय माँ, जय हो जय माँ, जय हो जय माँ, जय हो जय,
जय हो जय माँ, जय हो जय माँ, जय हो जय माँ, जय हो जय ।

खड्ग[11] ढाल और तीर धारे, धारे और त्रिशूल दण्ड[12],
गदा पाश[13] और धनुष धारे, धारे घण्टा और शंख ।

जय हो जय माँ, जय हो जय माँ, जय हो जय माँ, जय हो जय,
जय हो जय माँ, जय हो जय माँ, जय हो जय माँ, जय हो जय ।

घण्टे और करताल बजते, ढोल ताशे और मृदंग,
बज रहे खन-खन मजीरे, गूँजते चहुँ ओर शंख ।

जय हो जय माँ, जय हो जय माँ, जय हो जय माँ, जय हो जय,
जय हो जय माँ, जय हो जय माँ, जय हो जय माँ, जय हो जय ।

भक्तवत्सला[14], पापनाशिनी[15] दुष्टदलसंहारिणी[16],
कष्टमोचनी[17] भयविनाशिनी[18] सर्वमंगलकारिणी[19] ।

जय हो जय माँ, जय हो जय माँ, जय हो जय माँ, जय हो जय,
जय हो जय माँ, जय हो जय माँ, जय हो जय माँ, जय हो जय ।

1. महत्वपूर्ण विजय, सफलता ; 2. तीन आँखें धारण किए हुए ; 3. माथे का तिलक ; 4. कस्तूरी (नर हिरण की नाभि के पास थैली में पाया जाने वाला सुगंधित पदार्थ) ; 5. दस हाथ ; 6. शेर जिसका वाहन (सवारी) है ; 7. कानों में कुण्डल ; 8. माथे पर मुकुट ; 9. सफेद, कांतिमान और सुन्दर ; 10. संसार की मालकिन ; 11. तलवार ; 12. डंडा ; 13. रस्सी से बनाया गया घेरा, जिसमें कोई वस्तु फँसाई जा सके ; 14. भक्तों से बच्चों की तरह प्यार करने वाली ; 15. पाप का नाश करने वाली, पाप को खत्म करने वाली ; 16. बुरे लोगों के समूह का नाश करने वाली ; 17. कष्ट को दूर करने वाली ; 18. डर को समाप्त करने वाली ; 19. सभी के लिए कल्याणकारी ।

(27-09-2009)

बुलन्दशहर

13. प्रभु तेरी महिमा.......

प्रभु[1] तेरी महिमा[2] अपरम्पार[3],
वंदन[4] करुँ मैं बारम्बार[5] ।

तुम ही सत्[6] हो, तुम ही सनातन[7],
तुम ही पूरण[8], तुम ही पुरातन[9] ।
तुम ही सखा[10] हो, तुम ही सहोदर[11],
तुम ही हो, करुणा[12] आगार[13] ।

प्रभु तेरी महिमा अपरम्पार,
वंदन करुँ मैं बारम्बार ।

तुम ही अगोचर[14] तुम अविनाशी[15],
तुम ही अनामय[16], तुम घटवासी[17] ।
तुम ही अनंत[18] हो, तुम ही अनादि[19],
तुम ही हो, प्रभु पालन-हार[20] ।

प्रभु तेरी महिमा अपरम्पार,
वंदन करुँ मैं बारम्बार ।

तुम ही नंद[21] हो, तुम ही निरजंन[22],
तुम ही निरतिशय[23], तुम दुःखभंजन[24]।
तुम ही निर्मल[25], तुम ही निर्गुण[26],
तुम ही हो, जग[27] का आधार[28] ।

प्रभु तेरी महिमा अपरम्पार,
वंदन करुँ मैं बारम्बार ।

तुम ही अविचल[29], तुम अविकारी[30],
तुम ही अक्षत[31], तुम अघकारी[32] ।
तुम ही अजर[33] हो, तुम ही हो अज[34],
तुम ही हो, प्रभु तारणहार[35] ।

प्रभु तेरी महिमा अपरम्पार,
वंदन करुँ मैं बारम्बार ।

1. स्वामी, मालिक ; 2. बड़ाई, गौरव, प्रसिद्धि ; 3. अपार, असीम ; 4. वंदना, स्तुति ; 5. अनेकबार, पुनःपुनः ; 6. सत्य, सच, श्रेष्ठ ; 7. सदा बना रहने वाला ; 8. पूर्ण, समूचा, पूरा, सब का सब, नित्य, अनादि, अनंत ; 9. आद्य, सबसे पहले का ; 10. मित्र, दोस्त ; 11. सगा, सम्बन्धी ; 12. दया, रहम ; 13. खज़ाना, रहने का स्थान ; 14. जो इंद्रियों से न जाना जा सके, अप्रकट ; 15. जिसका नाश न हो, नित्य ; 16. दोष रहित, निर्दोष, स्वस्थ ; 17. हृदय में बसने वाला ; 18. जिसका अन्त न हो ; 19. आदि रहित ; 20. पालन पोषण करने वाला ; 21. सुख देने वाला, उत्तम, श्रेष्ठ, शुभ 22. दुर्गुण एवं दोष रहित, माया रहित ; 23. अद्वितीय, ऐसा कोई दूसरा न हो ; 24. दुःख का नाश करने वाला ; 25. मल रहित, दोष रहित, साफ ; 26. गुण रहित, बिना गुण के ; 27. संसार का ; 28. सहारा ; 29. स्थिर, अचल ; 30 जिसमें विकार न हुआ हो, नित्य ; 31. कल्याण, शिव, समूचा ; 32. पाप का हरण करने वाला, दुःख दूर करने वाला ; 33. नाश रहित, क्षय रहित ; 34. अजन्मा ; 35. उद्धार करने वाला, मोक्ष दिलाने वाला ।

(05-10-2009)
बुलन्दशहर

14. शक्ति दे माँ, शक्ति दे माँ......

शक्ति दे माँ, शक्ति दे माँ, शक्ति दे माँ, शक्ति दे,
शक्ति दे माँ, शक्ति दे माँ, शक्ति दे माँ, शक्ति दे ।

मन में नव[1], आह्लाद[2] भर दे,
आशा भर, विश्वास भर दे ।
भर दे नव, संकल्प[3] शुभकर[4],
हर्ष[5] भर, उल्लास[6] भर दे ।

शक्ति दे माँ, शक्ति दे माँ, शक्ति दे माँ, शक्ति दे,
शक्ति दे माँ, शक्ति दे माँ, शक्ति दे माँ, शक्ति दे ।

चित्त[7] में शुभ, राग[8] भर दे,
भाव[9] शुभ, अनुराग[10] भर दे ।
ऊर्जा[11] भर दे, शिथिल[12] तन[13],
कान्ति[14] भर, उत्साह[15] भर दे ।

शक्ति दे माँ, शक्ति दे माँ, शक्ति दे माँ, शक्ति दे,
शक्ति दे माँ, शक्ति दे माँ, शक्ति दे माँ, शक्ति दे ।

तम[16] को, ज्योतिर्मय[17] बना दे,
भर प्रभा[18], घट-घट[19] सजा दे ।
चल पड़ें, निर्भीक[20] निश्चल[21],
शुभ[22] श्रेयस्कर[23], पथ[24] दिखा दे ।

शक्ति दे माँ, शक्ति दे माँ, शक्ति दे माँ, शक्ति दे,
शक्ति दे माँ, शक्ति दे माँ, शक्ति दे माँ, शक्ति दे ।

सत्य[25] का, अभिज्ञान[26] दे दे,
धैर्य[27] दे दे, ध्यान[28] दे दे ।
दृष्टि[29] दे दे, धर्म[30] सम्यक्[31],
मनुजता[32] का, भान[33] दे दे ।

शक्ति दे माँ, शक्ति दे माँ, शक्ति दे माँ, शक्ति दे,
शक्ति दे माँ, शक्ति दे माँ, शक्ति दे माँ, शक्ति दे ।

1. नवीन, नया ; 2. खुशी, प्रसन्ता, हर्ष ; 3. दृढ़ निश्चय, विचार, पक्का इरादा ; 4. मंगलकारी, कल्याणकारी ; 5. खुशी ; 6. प्रसन्नता ; 7. अन्तःकरण, मन ; 8. अनुराग, प्रेम, इच्छा, कामना ; 9. भावना ; 10. प्रेम, भक्ति ; 11. बल, शक्ति, काम करने में व्यय होने वाली शक्ति ; 12. ढीला, थकामाँदा ; 13. शरीर ; 14. आभा, चमक, सौन्दर्य ; 15. उमंग, हौसला ; 16. अँधेरा, अंधकार ; 17. जगमगाता हुआ, अत्यन्त प्रकाशमान् ; 18. प्रकाश, दीप्ति, किरण ; 19. मन, अन्तःकरण, देह, शरीर, कलश, घड़ा ; 20. निडर, बिना डरे या भय के ; 21. अटल, स्थिर, अपरिवर्तनशील ; 22. कल्याणकारी ; 23. मंगलकारी, कल्याणकर ; 24. रास्ता ; 25. सच, यथार्थ, वास्तविक ; 26. पहचान, निशानी, अनुस्मरण ; 27. धीरज, धीरता, स्थिरता, सब्र ; 28. चित्त की एकाग्रता, स्वरूप, चिंतन, बुद्धि ; 29. अवलोकन, निगाह, नज़र, देखने की शक्ति ; 30. नैतिक एवं व्यवहारिक नियम, सदाचार, कर्त्तव्य, करने योग्य ; 31. उचित, उपयुक्त, पूरा, सब, भलीभाँति ; 32. मनुष्यता, मानवता ; 33. ज्ञान, बोध, आभास, प्रतीति, प्रकाश, रोशनी ।

(16-10-2009)
बुलन्दशहर

15. तम से न डर, तम से न डर......

तम[1] से न डर, तम से न डर,
निर्भय[2] विचर[3], निर्भय विचर ।

माँ की अनवरत[4] साधना[5],
उपवास[6], व्रत[7], आराधना[8] ।
किसी पुण्यता[9] का प्रतिफलन[10],
आशीष[11], तीर्थ[12], उपासना[13] ।

निष्फल[14] न कर, निष्फल न कर,
तम से न डर, तम से न डर ।

देव[15] का मन्दिर[16] है तन[17],
गर्भगृह[18] अन्तःकरण[19] ।
प्राण[20] दीपक लौ सदृश[21],
चेतना[22] आलोक[23] सम[24] ।

श्रद्धा[25] से भर, श्रद्धा से भर,
तम से न डर, तम से न डर ।

अप्रतिम[26] आनन्दपुंज[27] तू,
अविच्छेद[28] तू, अविच्छिन्न[29] तू ।
आह्लाद[30] अणु-अणु[31] में भरे,
सोद्देश्य[32] तू, स्वच्छन्द[33] तू ।

निर्झर[34] सा झर, निर्झर सा झर,
तम से न डर, तम से न डर ।

तू ही सनातन[35], सत्य[36] तू,
तू ही पुरातन[37], नित्य[38] तू ।
तू ही अजर[39], तू ही अमर[40],
तू ही अनघ[41], अलभ्य[42] तू ।

स्मृति[43] में भर, स्मृति में भर,
तम से न डर, तम से न डर ।

भरे विपुल[44] शक्ति[45] भुजाओं[46] में,
बहे गर्म रक्त[47] शिराओं[48] में ।
धैर्य[49], सत् संकल्प[50], शुचि[51],
शौर्य[52], साहस[53] भावों[54] में ।

जय नाद[55] कर, जय नाद कर,
तम से न डर, तम से न डर ।

1. अन्धकार, अँधेरा ; 2. बिना डर के ; 3. घूमना फिरना ; 4. लगातार, अविराम ; 5. उपासना, आराधना ; 6. भोजन का त्याग, फाका ; 7. संकल्प, नियम ; 8. पूजा ; 9. मंगलकारक, अच्छा एवं भला कार्य ; 10. परिणाम, पुरस्कार, प्रतिबिंब ; 11. असीस, आर्शीवाद ; 12. पुण्य स्थान, क्षेत्र ; 13. भक्ति ; 14. बेकार, व्यर्थ, बिना फल के ; 15. देवता ; 16. देवालय, विशेष भवन ; 17. शरीर ; 18. मंदिर के बीच की वह प्रधान कोठरी जिसमें मुख्य प्रतिमा रखी जाती है ; 19. मन, चित्त ; 20. जान, साँस, श्वास ; 21. समान, एक जैसा ; 22. ज्ञान मूलक मनोवृत्ति, बुद्धि, समझ ; 23. प्रकाश, रोशनी, देखना ; 24. एकसा, सदृश ; 25. आदरपूर्ण आस्था या विश्वास ; 26. बेजोड़, अनुपम ; 27. आनंदराशि या समूह ; 28. विच्छेद रहित, बिलगाव का अभाव ; 29. अटूट, अखंड ; 30. खुशी, प्रसन्नता, हर्ष ; 31. पदार्थ का सबसे छोटा अंश या कण ; 32. प्रयोजन लिए हुए, उद्देश्य सहित ; 33. स्वेच्छानुकूल आचरण करने वाला, बिना किसी भय, विचार या संकोच के ; 34. झरना ; 35. सदा बना रहने वाला, शाश्वत, नित्य ; 36. सच, यथार्थ, वास्तविक ; 37. आद्य, सबसे पहले का ; 38. शाश्वत, निरंतर ; 39. क्षय रहित, जो बूढ़ा न हो ; 40. न मरने वाला, अविनाशी ; 41. पवित्र, निरापद, शोकहीन, पुण्य ; 42. बहुमूल्य, दुर्लभ , जो मिलता न हो, अनमोल ; 43. स्मरण, याद ; 45. बड़ा, अगाध, बहुत बहुत गहरा ; 45. ताक़त ; 46. बाँहों ; 47. खून ; 48. खून की नली या नाड़ी ; 49. धीरज, धीरता, स्थिरता, सब्र ; 50. दृढ़ निश्चय, प्रतिज्ञा ; 51. पवित्र, शुद्ध, साफ, स्वच्छ ; 52. पराक्रम, वीरता, शूरता ; 53. हिम्मत ; 54. भावनाएँ ; 55. आवाज़, शब्द, ध्वनि ।

(25-10-2009)
बुलन्दशहर

16. खन-खन, खन-खन.......

खन-खन खन-खन, खन-खन खन-खन,
छम-छम छम-छम, छम-छम छम-छम ।
खन-खन खन-खन खनके कँगना, पायल बजती जाए,
मन गाए, मन गाए, मन गाए, मन गाए ।

पीहु-पीहु पीहु-पीहु, पीहु-पीहु पीहु-पीहु,
कूह-कूह कूह-कूह, कूह-कूह कूह-कूह ।
पीहु-पीहु पीहु-पीहु बोले पपीहा, कोयल बोले जाए,
मन गाए, मन गाए, मन गाए, मन गाए ।

झर-झर झर-झर, झर-झर झर-झर,
सर-सर सर-सर, सर-सर, सर-सर ।
झर-झर, झर-झर झरता निर्झर[1], मंद[2] पवन[3] हर्षाए,
मन गाए, मन गाए, मन गाए, मन गाए ।

कल-कल कल-कल, कल-कल कल-कल,
पल-पल पल-पल, पल-पल पल-पल ।
कल-कल, कल-कल जल[4] की धारा, ऋतु[5] आए ऋतु जाए,
मन गाए मन गाए, मन गाए मन गाए ।

1. झरना ; 2. धीमी ; 3. हवा ; 4. पानी ; 5. मौसम ।

(07-11-2009)
(बुलन्दशहर

17. सन्–सन् सन्–सन्......

सन्–सन् सन्–सन्, पुरवा सन्–सन्,
रिमझिम रिमझिम, रिमझिम सावन ।
मेघों[1] से दामिनी[2] द्युति[3] झाँके, कण–कण भीगा जाए ,
मन गाए मन गाए, मन गाए मन गाए ।

पुलकित पुलकित, तृण–तृण पुलकित,
सुरभित सुरभित, वन–वन सुरभित ।
गुनगुन गुनगुन करता भँवरा, पुष्पों पर मँडराए,
मन गाए मन गाए, मन गाए मन गाए ।

निशदिन निशदिन, आवक निशदिन,
टिमटिम टिमटिम, दीपक टिमटिम ।
तम को आशा ज्योतिर्मय[4] कर, स्वप्न[5] नया रच जाए,
मन गाए मन गाए, मन गाए मन गाए ।

झिलमिल झिलमिल, अम्बर झिलमिल,
खिलखिल खिलखिल, धरती खिलखिल ।
कौन रचयिता[6] कोई न जाने, सब के सब भरमाए,
मन गाए मन गाए, मन गाए मन गाए ।

1. बादलों ; 2. आकाश में चमकने वाली बिजली, तड़ित ; 3. चमक, कान्ति ; 4. प्रकाशित, प्रकाशमय ; 5. सपना ; 6. रचना करने वाला, बनाने वाला ।

(09-11-09)
बुलन्दशहर

18. गाओ तुम कोई गीत मधुर......

गाओ तुम कोई गीत मधुर, जिसको सुनकर मैं खो जाऊँ,
सप्त[1] स्वरों के सागर[2] में, मैं डूबूँ और मैं उतराऊँ ।

आना, पाना और मिल जाना, कहतें हैं विधि[3] का लेखा[4] है,
इस पल को ही अपना कह लैं, कल को किसने कब देखा है।
इस पल में ही मधुमास[5] भरे, मैं इस पल को ही जी जाऊँ,
गाओ तुम कोई गीत मधुर, जिसको सुनकर मैं खो जाऊँ ।

मेरे अन्तस्[6] में छाया तम[7], नित[8] गहरा होता जाता है,
अनजानी आशंका से मन, रह-रह कर घबराता है ।
बहते भावों की सुरसरि[9] में, मैं अपने कल्मष[10] धो जाऊँ,
गाओ तुम कोई गीत मधुर, जिसको सुनकर मैं खो जाऊँ ।

सूने-सूने नयना मेरे, जीवन यह रीता-रीता[11] है,
मरुथल[12] ही मरुथल दूर तलक, न बाग न कोई बगीचा है।
मृदुता[13] की रिमझिम वर्षा में, मैं पुलकित[14] सुरभित[15] हो जाऊँ,
गाओ तुम कोई गीत मधुर, जिसको सुनकर मैं खो जाऊँ ।

मेरा जग[16] से क्या नाता है, मैंने इतना ही जाना है,
सुख दुःख लहरें भव सागर[17] में, मुझको तो तैरे जाना है ।
सत्[18] हो, शिव[19] हो और सुन्दर हो, मैं तैरूँ और तैरे जाऊँ,
गाओ तुम कोई गीत मधुर, जिसको सुनकर मैं खो जाऊँ ।

1. सात ; 2. समुद्र ; 3. भाग्य, कर्म, व्यवस्था, कानून ; 4. हिसाब, एकाउन्ट ; 5. बसंत, चैत का महीना ; 6. मन ; 7. अन्धकार, अँधेरा ; 8. लगातार, प्रतिदिन, निरंतर ; 9. गंगा, कावेरी ; 10. मैल, दोष, पाप ; 11. खाली शून्य ; 12. रेगिस्तान, रेतीला और जल रहित प्रदेश ; 13. कोमलता, मधुरता ; 14. प्रेम, हर्ष आदि से गद्‌गद्, रोमांचित ; 15. सुगंधित, सुवासित ; 16. संसार ; 17. संसार रूपी समुद्र ; 18. सत्य, सच्चाई ; 19. कल्याण, मंगल ।

(18-11-2009)
बुलन्दशहर

19. तेरी ही माँ जय-जयकार.......

तेरी ही माँ जय-जयकार, तेरी ही माँ जय-जयकार ।

तुम ही आद्या[1], तुम ही गति[2] हो,
तुम ही विद्या[3], तुम ही चित्[4] हो ।
तुम ही अजरा[5], तुम ही अपरा[6],
तेरी ओ माँ शक्ति अपार[7] ।

तेरी ही माँ जय-जयकार, तेरी ही माँ जय-जयकार ।

तुम ही भूति[8], तुम ही रति[9] हो,
तुम ही बुद्धि[10], तुम ही मति[11] हो।
तुम ही परमा[12], तुम ही पुण्या[13],
तेरे रूप और नाम हजार ।

तेरी ही माँ जय-जयकार, तेरी ही माँ जय-जयकार ।

तुम ही ऋद्धि[14], तुम ही निधि[15] हो,
तुम ही सिद्धि[16], तुम ही यति[17] हो ।
तुम ही वनिता[18], तुम ही वरदा[19],
तुम ही हो, अपना आधार ।

तेरी ही माँ जय-जयकार, तेरी ही माँ जय-जयकार ।

तुम ही श्रद्धा[20], तुम ही धृति[21] हो,
तुम ही मेधा[22], तुम स्मृति[23] हो ।
तुम ही नित्या[24], तुम ही नूनुता[25],
तुम ही सृष्टि[26] और संहार[27] ।

तेरी ही माँ जय-जयकार, तेरी ही माँ जय-जयकार ।

1. आदि, मूल, दुर्गा ; 2. दशा, हालत, चाल, हरकत, गमन ; 3. ज्ञान ; 4. चेतना ; 5. क्षय रहित, सदा तरुण, अवस्था में रहने वाली ; 6. जिनसे श्रेष्ठ दूसरा कोई नहीं है ; 7. असीम, सीमारहित ; 8. उत्पत्ति होना, अस्तित्व में आना ; 9. आनंद, तृप्ति, प्रेम ; 10. समझ, अन्तःकरण की निश्चयात्मक स्थिति ; 11. बुद्धि, अक्ल, राय, सम्मति, इच्छा, कामना ; 12. सर्वोपरि श्रेष्ठ ; 13. पुण्य स्वरूपिणी, मंगलकारक, अच्छा एवं भला कार्य ; 14. समृद्धि ; 15. वैभव, आश्रय, स्थान ; 16. अणिमा आदि अष्टसिद्धि स्वरूपा, मोक्ष ; 17. इन्द्रियों को वश में करने वाली ; 18. परम सुन्दरी ; 19. वर देने वाली ; 20. आदरपूर्ण आस्था या विश्वास ; 21. धारणाशक्ति, धैर्य रूपिणी ; 22. बुद्धि ; 23. याद, स्मरण ; 24. शाश्वत, निरंतर, अविनाशी ; 25. अखिल मानव जिनके चरणों में सिर झुकाते हैं ; 26. रचना, निर्माण, उत्पत्ति ; 27. नाश, ध्वंस ।

(28-11-2009)
बुलन्दशहर

20. वक़्त की किताब में.......

वक़्त की किताब में, एक कहानी लिख चलो,
आन-बान-शान[1] की, ज़िन्दगानी[2] लिख चलो ।

सत्य पर सदा अटल[3], सिर कभी झुके नहीं,
ध्येय[4] ओर अग्रसर[5], पग[6] कभी रुके नहीं ।
उत्साह[7] और उमंग[8] की, चिर[9] ज़वानी लिख चलो,
आन-बान-शान की, ज़िन्दगानी लिख चलो ।

किसी का दर्द देखकर, अश्रु[10] बन छलक[11] गए,
किसी के सूने मन भरे, राग-रंग[12] नए-नए ।
नेह[13] और आस[14] की, कद्रदानी[15] लिख चलो,
आन-बान-शान की, ज़िन्दगानी लिख चलो ।

चहुँ दिशा[16] घना तिमिर[17], दीप बन के जल उठो,
शीत[18] से भरी शिशिर[19], पुष्प[20] बन के खिल उठो ।
हर्ष[21] और विषाद[22] की, आनी-जानी लिख चलो,
आन-बान-शान की, ज़िन्दगानी लिख चलो ।

मन से मन मिला कभी, स्वप्न[23] नव सजा चलो,
सुर में सुर मिला कभी, संग-संग गा चलो ।
प्रेम और साथ की, मेहरबानी लिख चलो,
आन-बान-शान की, ज़िन्दगानी लिख चलो ।

1. सजधज, ठाठ-बाट, तड़क-भड़क ; 2. जीवन ; 3. अचल, नित्य, स्थिर, पक्का ; 4. उद्देश्य ; 5. आगे बढ़ा हुआ ; 6. पैर ; 7. खुशी, हर्ष, उमंग, चमक ; 8. जोश, मौज, उल्लास ; 9. दीर्घकालीन, जो बहुत समय तक बना रहे ; 10. आँसू ; 11. उमड़कर बाहर गिरना ; 12. प्रिय सा सुखद, वस्तु की ओर आकर्षण या प्रवृति ; 13. स्नेह, प्रीति, प्यार ; 14. आशा ; 15. सम्मान का भाव, प्रतिष्ठा भाव ; 16. चारों दिशाओं में ; 17. अन्धकार ; 18. ठंड, जाड़ा ; 19. शिशिर ऋतु, पतझड़ ; 20. फूल ; 21. खुशी ; 22. दु:ख ; 23. सपना ।

(03-12-2009)
बुलन्दशहर

21. भावों से भर शब्द हों निसृत.......

भावों से भर शब्द हों निसृत[1], सुर-लय भी मिल जाए,
मन गाए मन गाए, मन गाए मन गाए ।
कोई छवि[2] कभी चुपके से आकर, आँखों में बस जाए,
मन गाए मन गाए, मन गाए मन गाए ।

आरोही[3]-अवरोही[4] बन्धन[5], प्राण[6] सजाए शुभ[7] स्पन्दन[8],
राग[9] सजाए उर[10] में कोई, पुलक-पुलक[11] पुलकाए[12]।
मन गाए मन गाए, मन गाए मन गाए,
मन गाए मन गाए, मन गाए मन गाए ।

हास्य[13] भरे कभी करुणा[14] सारी, शान्त[15] भरे कभी हो श्रृंगारी[16],
मौन ही मौन में शब्द सजे कभी, कभी मुखरित[17] हो जाए ।
मन गाए मन गाए, मन गाए मन गाए,
मन गाए मन गाए, मन गाए मन गाए ।

काशी[18] कोशल[19] और वृन्दावन[20], शुभ्र[21] हिमालय दक्षिण दुर्गम[22],
सृष्टि[23]-संहार[24] का डमरू[25] बाजे, वंशी[26] रस बरसाए ।
मन गाए मन गाए, मन गाए मन गाए,
मन गाए मन गाए, मन गाए मन गाए ।

1. नि:सृत, निकला हुआ ; 2. चित्र, तस्वीर, शोभा, सुन्दरता ; 3. नीचे से ऊपर जाना (श्वास) ; 4. उतरना, ऊपर से आना (श्वास) ; 5. बाँधना, निर्माण ; 6. जीवनी शक्ति, जान ; 7. मंगलकारक, कल्याणप्रद ; 8. गति, प्रस्फुरण, काँपना ; 9. विशिष्ट गान प्रकार, अनुराग, प्रेम, ; 10. हृदय, छाती ; 11. रोमांच ; 12. रोमांचित ; 13. हँसी, नौ रसों में से एक ; 14. दया, रहम, नौ रसों में से एक ; 15. स्वाभाविक भावशून्यता ; 16. सज्जा, सजावट ; 17. गुंजरित, ध्वनित, शब्दायमान ; 18. भगवान शिव से सम्बन्धित स्थान ; 19. भगवान राम से सम्बन्धित स्थान ; 20. भगवान कृष्ण से सम्बन्धित स्थान ; 21. श्वेत, सफेद ; 22. कठिन मार्ग ; 23. उत्पत्ति, रचना, निर्माण ; 24. ध्वंस, नाश ; 25. भगवान शिव से सम्बन्धित वाद्य ; 26. श्रीकृष्ण से सम्बन्धित वाद्य ।

(05.12.2009)
बुलन्दशहर

22. जय जयति माँ......

जय[1] जयति[2] माँ, जय जयति माँ,
जय जयति माँ, जय हो जय ।

चारुदात्री[3], चार्वाचरिता[4] चित्रा[5] चारुविलासिनी[6],
चित्स्वरूपा[7] चोदयित्री[8] चारुगति[9] चन्द्रहासिनी[10]।

जय जयति माँ, जय जयति माँ,
जय जयति माँ, जय हो जय ।

दीनवत्सला[11] दुष्टमर्दिनि[12] दुर्जया[13] दुखहारिणी[14],
देववन्द्या[15] दिग्विमोहिनी[16] दुर्गमायुधधारिणी[17]।

जय जयति माँ, जय जयति माँ,
जय जयति माँ, जय हो जय ।

पुण्यभद्रा[18] पुष्पहासा[19] परमा[20] प्रीति[21] प्रकाशिनी[22],
पारदात्री[23] प्राणवाहिनी[24] परमाह्लादकारिणी[25] ।

जय जयति माँ, जय जयति माँ,
जय जयति माँ, जय हो जय ।

सर्गरूपा[26] सदाधारा[27] सर्वमंगलरूपिणी[28],
सर्वावासा[29] सदानन्दा[30] सर्वबीजस्वरूपिणी[31]।

जय जयति माँ, जय जयति माँ,
जय जयति माँ, जय हो जय ।

1. विजय, जीत, सफलता ; 2. विजय, जीतने वाला या वाली, सफलता पाने वाली या वाला, पाने वाला या वाली ; 3. सुन्दर वस्तुएँ देने वाली ; 4. पवित्र आचरणों वाली ; 5. अद्‌भुत रूपों से सम्पन्न ; 6. मनोहर विलासों से सम्पन्न ; 7. चिन्मयी भगवती ; 8. हृदय में प्रेरणा प्रदान करने वाली ; 9. सुन्दर गति से सम्पन्न ; 10. चन्द्रमा को भी अपने मुख चन्द्र द्वारा, आह्लादित करने वाली ; 11. दीन जनों पर कृपा करने वाली ; 12. दुष्टों का नाश करने वाली ; 13. जिसे जीतना कठिन हो ; 14. दु:ख हरने वाली ; 15. देवताओं की परम वन्दनीय देवी ; 16. समस्त दिशाओं को मोहित करने वाली ; 17. भयानक आयुधों (हथियारों) को धारण करने वाली ; 18. पवित्र करने में परम कुशल ; 19. पुष्प जिसके हास्य के द्योतक हैं ; 20. सर्वोपरि, श्रेष्ठतमा ; 21. प्रीतिस्वरूपिणी ; 22. सर्वत्र प्रकाश फैलाने वाली ; 23. सबका उद्धार करने वाली ; 24. जिस की प्राण सवारी है ; 25. परमानन्द देने वाली ; 26. मूलस्वरूपा, प्रकृति स्वरूपा ; 27. सबकी सदा आधार स्वरूपिणी ; 28. सबका कल्याण स्वरूपिणी ; 29. सर्वव्यपिनी ; 30. सर्वदा प्रसन्न रहने वाली ; 31. सबमें बीज रूप में विद्यमान ।

(07-12-2009)
बुलन्दशहर

23. सब भूतों में प्राणस्वरूपा.......

सब भूतों[1] में प्राणस्वरूपा[2], जय माँ जय माँ जय-जय माँ ।
चित्तस्वरूपा[3], बुद्धिस्वरूपा[4],
विद्यास्वरूपा[5], मेधास्वरूपा[6] ।
सब भूतों में सत्यस्वरूपा[7], जय माँ जय माँ जय-जय माँ ।
दयास्वरूपा[8], क्षमास्वरूपा[9],
श्रद्धास्वरूपा[10], कृपास्वरूपा[11] ।
सब भूतों में कीर्तिस्वरूपा[12], जय माँ जय माँ जय-जय माँ ।
क्षुधास्वरूपा[13], तृष्णास्वरूपा[14],
निद्रास्वरूपा[15], तन्द्रास्वरूपा[16] ।
सब भूतों में भुक्तिस्वरूपा[17], जय माँ जय माँ जय-जय माँ ।
तुष्टिस्वरूपा[18], पुष्टिस्वरूपा[19],
कान्तिस्वरूपा[20], शान्तिस्वरूपा[21] ।
सब भूतों में शक्तिस्वरूपा[22], जय माँ जय माँ जय-जय माँ ।

1. प्राणियों ; 2. साँस, श्वास, जीवनी शक्ति, जान ; 3. हृदय, मन, चेतना, ज्ञान, ब्रह्म, अनुभूति, विचार, आत्मा ; 4. समझ, अक्ल, मनीषा, अंतःकरण की निश्चयात्मक वृत्ति ; 5. ज्ञान, इल्म, व्यवस्थित ज्ञान ; 6. धारण शक्ति, बुद्धि ; 7. सच, यथार्थ, यथातथ्य, विश्वस्त, असल ; 8. करुणा, रहम ; 9. माफ़ी, सहनशीलता, अपराध को बिना प्रतिकार भावना को सह लेने की प्रवृत्ति ; 10. आदरपूर्ण आस्था या विश्वास ; 11. अनुग्रह, दया ; 12. यश, प्रसिद्धि, ख्याति ; 13. भूख, अतृप्ति ; 14. प्यास, विशेष कामना रखने वाला, विकल ; 15. नींद ; 16. हल्की नींद, ऊँघाई, थकान ; 17. भोजन, आहार, भोग, लौकिक सुख ; 18. संतोष, प्रसन्नता ; 19. दृढ़ता, मजबूती, पोषण ; 20. सौन्दर्य, चमक, आभा ; 21. मन की स्थिरता, सूनापन, निःशब्दता ; 22. ताक़त, पराक्रम, बल, योग्यता ।

(13-12-2009)
बुलन्दशहर

24. जय जय जय जय.......

जय जय जय जय, जय जय जय जय,
जय जय जय जय, जय जय जय जय ।
ऊँकारी[1] ऐंकारी[2] जय जय,
ह्रींकारी[3] क्लींकारी[4] जय जय ।
जय जय जय जय, जय जय जय जय,
जय जय जय जय, जय जय जय जय ।
सुखदायिनि[5], बलदायिनि[6] जय जय,
यशदायिनि[7], वरदायिनि[8] जय जय।
जय जय जय जय, जय जय जय जय,
जय जय जय जय, जय जय जय जय ।
नारायणि[9] इन्द्राणी[10] जय जय,
शर्वाणी[11] ब्रह्माणी[12] जय जय ।
जय जय जय जय, जय जय जय जय,
जय जय जय जय, जय जय जय जय ।
तमहारिणि[13] अघहारिणि[14] जय जय,
भयहारिणि[15] भवतारिणि[16] जय जय।
जय जय जय जय, जय जय जय जय,
जय जय जय जय, जय जय जय जय ।

1. पर ब्रह्म वाचक शब्द ; 2. सृष्टि स्वरूपिणी ; 3. सृष्टि पालन ; 4. कामरूपिणी 5. सुख देने वाली ; 6. बल देनी वाली ; 7. यश देने वाली ; 8. वरदान देने वाली ; 9. लक्ष्मी, दुर्गा ; 10. इन्द्र की पत्नी, शची, दुर्गा देवी, बड़ी इलायची ; 11. पार्वती ; 12. ब्रह्मा की स्त्री, सरस्वती ; 13. अन्धकार व अज्ञान को हरने वाली ; 14. पापों को हरने वाली ; 15. डर को हरने वाली ; 16. भव सागर से मुक्ति देने वाली ।

(15-12-2009)
बुलन्दशहर

25. नमस्कार है देवी को.......

नमस्कार है देवी को, शिवा[1] महादेवी[2] को नमस्कार,
प्रकृति[3], भद्रा[4] को नियमपूर्वक[5] जगदम्बा[6] को नमस्कार ।

रौद्रा[7], नित्या[8] को नमस्कार, गौरी[9] धात्री[10] को नमस्कार,
ज्योत्सनामयी[11] चन्द्ररूपिणी[12] सुखरूपा[13] को नमस्कार ।

कल्याण[14] करें शरणागत[15] का, वृद्धि[16] सिद्धि[17] को नमस्कार,
नैर्ऋती[18], नृपलक्ष्मी[19] को, शर्वाणी[20] को नमस्कार ।

दुर्गा[21], दुर्गपारा[22] को, सारा[23] सर्वकारिणी[24] को नमस्कार,
नमन[25] ख्याति[26] और कृष्णा[27] को धूम्रा[28] देवी को नमस्कार ।

अत्यन्त[29] सौम्य[30], अत्यन्त रौद्र[31] रूपा देवी को नमस्कार,
जगत्[32] आधार[33] कृतिदेवी[34] को बारम्बार नमस्कार ।

सब भूतों में विष्णुमाया[35] रूप में, जानी जाती वह देवी,
नमस्कार है, नमस्कार है, नमस्कार है, नमस्कार ।

सब भूतों में चित्त[36] रूप में, जो है स्थित वह देवी,
नमस्कार है, नमस्कार है, नमस्कार है, नमस्कार ।

सब भूतों में बुद्धि[37] रूप में, जो है स्थित वह देवी,
नमस्कार है, नमस्कार है, नमस्कार है, नमस्कार ।

सब भूतों में निद्रा[38] रूप में, जो है स्थित वह देवी,
नमस्कार है, नमस्कार है, नमस्कार है, नमस्कार ।

सब भूतों में क्षुधा[39] रूप में, जो है स्थित वह देवी,
नमस्कार है, नमस्कार है, नमस्कार है, नमस्कार ।

सब भूतों में छाया[40] रूप में, जो है स्थित वह देवी,
नमस्कार है, नमस्कार है, नमस्कार है, नमस्कार ।

सब भूतों में शक्ति[41] रूप में, जो है स्थित वह देवी,
नमस्कार है, नमस्कार है, नमस्कार है, नमस्कार ।

सब भूतों में तृष्णा[42] रूप में, जो है स्थित वह देवी,
नमस्कार है, नमस्कार है, नमस्कार है, नमस्कार ।

सब भूतों में क्षमा[43] रूप में, जो है स्थित वह देवी,
नमस्कार है, नमस्कार है, नमस्कार है, नमस्कार ।

सब भूतों में जाति[44] रूप में, जो है स्थित वह देवी,
नमस्कार है, नमस्कार है, नमस्कार है, नमस्कार ।

सब भूतों में लज्जा[45] रूप में, जो है स्थित वह देवी,
नमस्कार है, नमस्कार है, नमस्कार है, नमस्कार ।

सब भूतों में शान्ति[46] रूप में, जो है स्थित वह देवी,
नमस्कार है, नमस्कार है, नमस्कार है, नमस्कार ।

सब भूतों में श्रद्धा[47] रूप में, जो है स्थित वह देवी,
नमस्कार है, नमस्कार है, नमस्कार है, नमस्कार ।

सब भूतों में कान्ति[48] रूप में, जो है स्थित वह देवी,
नमस्कार है, नमस्कार है, नमस्कार है, नमस्कार ।

सब भूतों में लक्ष्मी[49] रूप में, जो है स्थित वह देवी,
नमस्कार है, नमस्कार है, नमस्कार है, नमस्कार ।

सब भूतों में वृत्ति[50] रूप में, जो है स्थित वह देवी,
नमस्कार है, नमस्कार है, नमस्कार है, नमस्कार ।

सब भूतों में स्मृति[51] रूप में, जो है स्थित वह देवी,
नमस्कार है, नमस्कार है, नमस्कार है, नमस्कार ।

सब भूतों में दया[52] रूप में, जो है स्थित वह देवी,
नमस्कार है, नमस्कार है, नमस्कार है, नमस्कार ।

सब भूतों में तुष्टि[53] रूप में, जो है स्थित वह देवी,
नमस्कार है, नमस्कार है, नमस्कार है, नमस्कार ।

सब भूतों में मातृ[54] रूप में, जो है स्थित वह देवी,
नमस्कार है, नमस्कार है, नमस्कार है, नमस्कार ।

सब भूतों में भ्रान्ति[55] रूप में, जो है स्थित वह देवी,
नमस्कार है, नमस्कार है, नमस्कार है, नमस्कार ।

इन्द्रिय वर्ग[56] की अधिष्ठात्री[57], व्याप्त[58] सदा सब जीवों में,
व्याप्त वही सब ओर सदा, व्याप्ति देवी को नमस्कार ।

चैतन्य रूप से व्याप्त जगत में, जग में स्थित वह देवी,
नमस्कार है, नमस्कार है, नमस्कार है, नमस्कार ।

स्तुति[59] कीं सुरगण[60]–सुरपति[61] ने अपने अभीष्ट[62] को पाने को,
संकट[63] हर लो हे ईश्वरी[64], कल्याण[65] करो और मंगल[66] दो ।

दैत्यों[67] से सताए हम सभी देवता[68], करते हैं उस परमेश्वरी[69] को नमस्कार,
जो भक्ति[70] से विनम्र[71] पुरुषों द्वारा स्मरण[72] करने पर करे विपत्ति[73] नाश[74] ।

1. दुर्गा, पवित्रा, गिरिजा, सौभाग्यवती स्त्री ; 2. सबसे बड़ी देवी ; 3. स्वभाव, मिजाज, वह मूल तत्व जिसका परिणाम जगत् है, माया, धर्म, मूल गुण, स्त्री, चराचर संसार ; 4. कल्याणकारिणी शक्ति, पृथ्वी ; 5. विधि के अनुसार ; 6. दुर्गा, भवानी ; 7. रुद्र की पत्नी, गौरी, देवी ; 8. पार्वती, मनसा देवी, एक शक्ति का नाम ; 9. पार्वती, गिरिजा ; 10. माता, माँ, भूमि, पृथ्वी ; 11. चन्द्रमा की किरणों जैसी ; 12. चन्द्रमा जैसे रूप वाली ; 13. सुख, प्रसन्नतामय ; 14. मंगल, शुभ, शोभाग्य, भलाई ; 15. पनाह में आया हुआ ; 16. समृद्धि, विकास, प्रगति, अभ्युदय ; 17. सफलता, प्रश्न का हल, दक्षता, अलौकिक शक्तियाँ ; 18. राक्षसों की लक्ष्मी ; 19. राजाओं की लक्ष्मी ; 20. शिव पत्नी ; 21. आद्या शक्ति, दुर्गम नामक दैत्य को मारने वाली ; 22. दुर्गम संकट से पार उतारने वाली ; 23. सब की सार भूता ; 24. सब का कारण ; 25. नमस्कार ; 26. प्रसिद्धि, यश, शोहरत ; 27. काली (देवी), द्रोपदी, पीपल ; 28. दुर्गा, सूर्य की बारह कलाओं में से एक ; 29. अत्यधिक, नितान्त, अनन्त ; 30. शीतल

और स्निग्ध, सुन्दर, रमणीय, मृदुल, कोमल ; 31. क्रोध रूप वाली, गुस्सा, भीषण, रुद्रता ; 32. संसार, दुनियाँ ; 33. सहारा, सम्बन्ध ; 34. रचना, किया हुआ कार्य ; 35. मोहकारिणी शक्ति, अविद्या, प्रकृति, कपट, धोखा ; 36. हृदय, चेतना, ज्ञान, ब्रह्म, अनुभूति, विचार ; 37. समझ, अक्ल, मनीषा, अन्तःकरण की निश्चयात्मक वृत्ति ; 38. नींद ; 39. भूख, अतृप्ति ; 40. छाया ; 41. ताक़त, पराक्रम, बल, योग्यता ; 42. प्यास, विशेष कामना रखने वाला, विकल्प ; 43. माफ़ी, सहनशीलता, अपराध को बिना प्रतिकार किये सह लेने की प्रवृत्ति ; 44. वंश, कुल, वर्ण, वर्ग, जन्म ; 45. शर्म, हया, लाज ; 46. मन की स्थिरता, सूनापन, निःशब्दता ; 47. आदरपूर्ण आस्था या विश्वास ; 48. सौन्दर्य, चमक, आभा ; 49. धन, संपत्ति, दौलत, शोभा, श्री (जो देवी अपने स्नेहभरी दृष्टि से विश्व को निरन्तर निरखती और लक्षित करती रहती है, वही अत्यन्त गौरवान्वित होने के कारण महालक्ष्मी नाम से प्रसिद्ध हुई– पृष्ठ 769– श्रीमद्देवीभागवत) ; 50. मन अथवा चित्त का व्यापार, प्रकार, ढंग ; 51. याद, स्मरण ; 52. करुणा, रहम ; 53. संतोष, प्रसन्नता ; 54. माँ, माता ; 55. भ्रम, अयथार्थ ज्ञान, चक्कर, संदेह ; 56. शरीर के ज्ञान एवं कर्म के साधन रूप अंग ; 57. माता, अध्यक्षा, देवी ; 58. सर्वत्र फैलने वाला, आच्छादन ; 59. प्रशंसा, चाटुकारिता ; 60. देवताओं ; 61. इन्द्र ; 62. चाहा हुआ, प्रिय, रुचिकर, अभिप्रेत, मनोरथ ; 63. विपत्ति, आफत, ख़तरा, कठिनाई, मुसीबत ; 64. स्वामिनी, मालकिन ; 65. शुभ, अच्छा ; 66. मंगल, शुभ, कल्याण, भलाई ; 67. दिति की संतति, कश्यप के वे पुत्र जो दिति नाम की स्त्री से पैदा हुए थे ; 68. अदिति की संतति, कश्यप के वे पुत्र जो अदिति नाम की स्त्री से पैदा हुए थे ; 69. दुर्गा या देवी, सबकी मालकिन ; 70. आराधना, सेवा, अत्यन्त अनुराग, श्रद्धा ; 71. विनीत और सुशील, झुका हुआ ; 72. याद, स्मृति ; 73. संकट, आफत, यातना, दुःख ; 74. अस्तित्व न रहना, सत्ता समाप्त हो जाना, बरबादी, लय, ध्वस्त होना ।

मार्कण्डेयपुराण के अध्याय 82, देवीमहात्म्य वर्णन के देवा ऊचुः (देवता बोले), का भावानुवाद ।

(25-12-2009)
बुलन्दशहर

26. चंचल चंचल चंचल चितवन.......

चंचल[1] चंचल चंचल चितवन[2],
मदमय[3] मदमय मदमय यौवन[4] ।
सर-सर सर-सर सर-सर सर-सर, आँचल उड़ता जाए,
कोई गाए कोई गाए, कोई गाए कोई गाए ।

कण-कण कण-कण कण-कण कंकण[5],
किण्-किण् किण्-किण् किण-किण् किंकिणी[6] ।
रून-झुन रून-झुन रून-झुन रून-झुन, पायल शोर मचाए,
कोई गाए कोई गाए, कोई गाए कोई गाए ।

मदिरम्[7] मदिरम् मदिरम् नयना[8],
मधुरिम[9] मधुरिम मधुरिम बैना[10] ।
गुप-चुप गुप-चुप गुप-चुप गुप-चुप, अधरों[11] में मुस्काए,
कोई गाए कोई गाए, कोई गाए कोई गाए ।

कुसुमित[12] कुसुमित कुसुमित हो तन,
पुलकित[13] पुलकित पुलकित हो मन ।
मन्थर-मन्थर[14] मन्थर-मन्थर, पग[15] धरती जब आए,
कोई गाए कोई गाए, कोई गाए कोई गाए ।

1. जो बराबर गतिशील हो, चपल, शरारती, हिलने-डुलने वाला ; 2. प्रेमपूर्वक देखने का ढ़ंग, कटाक्ष, दृष्टि, निगाह ; 3. मस्ती से भरा हुआ, गर्व से भरा, मतवाला ; 4. युवावस्था, जवानी ; 5. कंगन, कड़ा ; 6. करघनी, क्षुद्र घंटिका, जेहर, कमरकस ; 7. मद् से भरा हुआ, मस्ती से भरा ; 8. आँखें ; 9. मीठा, मधुर, मिठास युक्त ; 10. बातें ; 11. ओठों ; 12. पुष्पित, खिला हुआ ; 13. प्रेम, हर्ष आदि से गद्गद्, रोमांचित ; 14. धीमा, मंद ; 15. पैर ।

(27-12-2009)
बुलन्दशहर

27. सूर्य की किरणों सदृश.......

सूर्य[1] की किरणों सदृश[2] बन, काट दो इस घोर[3] तम[4] को,
इस जगत्[5] को यह दिखा दो, सूर्य के प्रतिरूप[6] हम हैं ।
अब उठो और उठ के छू लो, ऊँचे-ऊँचे इस गगन[7] को,
इस जगत् को यह जता दो, विन्ध्य[8] के अनुरूप[9] हम हैं ।

चीखतीं-चिंघाड़तीं अब, शान्त और सुरभित[10] हवाएँ,
कौंधतीं बिजली गरजते मेघ[11], कंपित[12] कर दिशाएँ ।
हो रहो निर्भीक[13] निश्चल[14], शान्त[15] अविचल[16] कर स्वयं[17] को,
इस जगत् को यह दिखा दो, योगी हैं अवधूत[18] हम हैं ।

मनुजता[19] निरुपाय[20] होती, विषण्णता[21] भरती फ़जाएँ[22],
शोध[23] की ज्वाला[24] में जलती, नेह[25] की धूँ-धूँ चिताएँ ।
मित्रता[26] सौहार्द[27] के, फूलों से भर दो इस चमन[28] को,
इस जगत् को यह दिखा दो, शान्ति के प्रारूप[29] हम हैं ।

नित्य-प्रति[30] कटते ही जाते, बाग़ वन[31] उपवन[32] बग़ीचे,
नित्य-प्रति घटते ही जाते, घास के कोमल[33] ग़लीचे ।
हरीतिमा[34] भर कर सजा दो, पीत[35] होते इस वसन[36] को,
इस जगत् को यह दिखा दो, इस धरा[37] के पूत[38] हम हैं ।

आयुधों[39] की होड़[40] सी है, रक्तरंजित[41] हतन[42] तन[43] हैं,
आर्त्तस्वर[44] रोदन[45] पुकारें, टूटते जलते भवन[46] हैं ।
उद्ध्वस्त[47] हो आगे बढ़ो और रोक दो, तुम इस विगम[48] को,
इस जगत् को यह दिखा दो, शक्ति के सद्रूप[49] हम हैं ।

1. सूरज, आदित्य, भानु ; 2. समान, एक जैसा, समानता, तुल्यता ; 3. गहरा, डरावना, सघन, घना ; 4. अँधेरा, अंधकार, कालिख, कालिमा, अज्ञान, अविद्या,

माया, मोह, क्रोध, गुस्सा, काला, दूषित, बुरा ; 5. दुनियाँ, विश्व, संसार, पृथ्वी के निवासी, विशिष्ट प्रकार का कार्य क्षेत्र ; 6. नकल, प्रतिमा, चित्र, तस्वीर ; 7. आकाश, नभ, आसमान ; 8. यह पर्वत भारतवर्ष के मध्य में पूर्व से पश्चिम को फैला हुआ है । आर्यावर्त देश की दक्षिण सीमा पर यह पर्वत है विंध्य पर्वत के दक्षिण का प्रदेश दक्षिणापथ या दक्षिण कहलाता है । इसमें दो नदियाँ नर्मदा और ताप्ती दक्षिण और पश्चिम दिशा में बहकर अरब की खाड़ी में गिरती हैं। इस पर्वत के पत्थर प्राय: बलुए और परतदार होते हैं । इसकी अनेक शाखाएँ प्रशाखाएँ सतपुरा आदि नाम से विख्यात हैं । पुराणानुसार यह सात कुलपर्वतों में है और मनु के अनुसार मध्य देश की दक्षिण सीमा है । महाभारत में कथा है कि विंध्य ने कहा कि मेरू (सुमेरू = पामीर) हिमालय के समान तुम हमारी प्रदक्षिणा किया करो । जब सूर्य ने न माना तब विंध्य ऊपर उठने लगा और यह आशंका हुई कि यह सूर्य का मार्ग ही रोक लेगा । देवताओं ने अगस्त्य जी प्रार्थना की । अगस्त्य उनके पास गये और उसने साष्टांग दंडवत किया । मुनि ने कहा जब तक मैं न लौटूँ, तब तक इसी तरह पड़े रहना । इतना कहकर अगस्त्य जी चले गए और फिर वापिस नहीं आए । कहते हैं कि इसी लिये यह पर्वत अब तक ज्यों का त्यों लेटा पड़ा है और इसीलिए इसका इतना अधिक विस्तार है ; 9. समान रूप वाला, जैसा ; 10. सुगंधित, सुवासित ; 11. बादल ; 12. काँपता हुआ, हिलाया हुआ ; 13. निडर ; 14. निष्कपट, छलरहित ; 15. विनम्र, संतुष्ट, मन की स्थिरता, आराम, चैन ; 16. अचल, स्थिर ; 17. अपने आप, खुद ; 18. सन्यासी, विरक्त ; 19. मनुष्यता, इंसानियत ; 20. लाचार, साधनहीन ; 21. विषाद, शोक या रंज, मूर्खता, बेवकूफी, जड़ता ; 22. वातावरण, मैदान, शोभा ; 23. बदला, प्रतिकार, प्रतिशोध, शुद्धि संस्कार, सफाई, परीक्षा, खोज ; 24. आग की लपट, अग्निशिखा, पीड़ा, संताप ; 25. स्नेह, प्रेमभाव, कोमलता ; 26. दोस्ती ; 27. सद्‌भाव, दोस्ती, मैत्री, हृदय की सरलता ; 28. फुलवारी, छोटा बग़ीचा ; 29. प्राथमिक रूप, मसौदा, प्रालेख, पूर्वगामी रूप ; 30. प्रतिदिन, हर-रोज ; 31. जंगल ; 32. छोटा जंगल, बाग़, बग़ीचा ; 33. मुलायम, नरम ; 34. हरियाली ; 35. पीला, पीले रंग का ; 36. कपड़ा ; 37. पृथ्वी, ज़मीन ; 38. पुत्र, बेटा, पवित्र, शुद्ध ; 39. हथियार ; 40. प्रतिस्पर्द्धा, शर्त, बाजी, जिद्, हठ ; 41. खून से सने हुए ; 42. मृत, घायल ; 43. शरीर, देह ; 44. दर्द भरी पुकार, गुहार ; 45. रोना ; 46. मकान, वास, घर ; 47. हाथ ऊपर उठाए हुए ; 48. नाश, मृत्यु ; 49. अच्छा रूप, कल्याणकारी रूप ।

(03-01-2010)
बुलन्दशहर

28. जब से लागे तुम संग नैना......

जब से लागे तुम संग नैना[1],
आए न मुझको तुम बिन चैना[2] ।
जियरा[3] में मेरे हूक[4] उठत है,
पल-पल याद सताए ।
कोई गाए कोई गाए, कोई गाए कोई गाए,
कोई गाए कोई गाए, कोई गाए कोई गाए ।

तुम बिन काटे नहीं कटते दिन,
रात गुजारूँ करवट गिन-गिन ।
उजियारा है अब अंधियारा,
तुम बिन कुछ न सुहाए ।
कोई गाए कोई गाए, कोई गाए कोई गाए,
कोई गाए कोई गाए, कोई गाए कोई गाए ।

किसको अपनी पीर[5] बताऊँ,
किसके आगे रोऊँ-गाऊँ ।
जिसको लागी वह ही जाने,
वैसे दर्द जताए ।
कोई गाए कोई गाए, कोई गाए कोई गाए,
कोई गाए कोई गाए, कोई गाए कोई गाए ।

पलकों से मैं पंथ[6] बुहारूँ,
हर आहट[7] पर द्वार[8] निहारूँ ।
आ जाओ अब, आ भी जाओ,
नयना जल[9] भर लाए ।
कोई गाए कोई गाए, कोई गाए कोई गाए,
कोई गाए कोई गाए, कोई गाए कोई गाए ।

1. नयन, आँखें ; 2. आराम, चैन, मानसिक शान्ति ; 3. मन ; 4. कसक, पीड़ा, शूल, आशंका ; 5. दर्द, वेदना, तकलीफ़, दु:ख, पीड़ा ; 6. पथ, रास्ता ; 7. किसी के आने जाने, बात करने, हिलने-डुलने से उत्पन्न हुयी मंद ध्वनि, पदचाप ; 8. दरवाज़ा ; 9. पानी ।

(04-01-2010)
बुलन्दशहर

29. आस्था के सुर सजा लो.......

आस्था[1] के सुर सजा लो, नेह[2] भर लो गीत गा लो,
क्षरण[3] की हर एक घड़ी[4] है, सृजन[5] की वंशी[6] बजा लो ।
सुर सजा लो सुर सजा लो, सुर सजा लो सुर सजा लो,
गीत गा लो गीत गा लो, गीत गा लो गीत गा लो ।

सूना-सूना तृषित[7] मन है, ना उमंग है ना तरंग है,
घिर रहे मन के तिमिर[8] में, आस के दीपक जला लो ।
जगमगा लो जगमगा लो, जगमगा लो जगमगा लो,
गीत गा लो गीत गा लो, गीत गा लो गीत गा लो ।

लालिमा[9] फैलाए नभ[10] है, सूर्य का आना अटल[11] है,
हो कोई नवजात[12] कलिका[13], पुष्प[14] सा खुद को खिला लो ।
खिलखिला लो खिलखिला लो, खिलखिला लो खिलखिला लो,
गीत गा लो गीत गा लो, गीत गा लो गीत गा लो ।

गा रही कूह-कूह कोयलिया[15], पीहू-पीहू बोले पपीहरा[16],
फुदकती कहती है बुलबुल साथ मेरे चहचहा लो ।
गुन गुना लो गुन गुना लो, गुन गुना लो गुन गुना लो,
गीत गा लो गीत गा लो, गीत गा लो गीत गा लो ।

ज़िन्दगी उसको सुहायी[17], जिसने इससे लय मिलायी,
धड़कनों के साज पर तुम, लय से इसकी लय मिला लो ।
मुस्कुरा लो मुस्कुरा लो, मुस्कुरा लो मुस्कुरा लो,
गीत गा लो गीत गा लो, गीत गा लो गीत गा लो ।

1. विश्वास, निष्ठा, स्थित होने का विश्वास ; 2. स्नेह, प्रीति, प्यार ; 3. नाश ; 4. काल का प्राचीन मान (जो 24 मिनट का होता है) ; 5. रचना, सर्जन, उत्पत्ति, सृष्टि ; 6. बाँसुरी ; 7. प्यास, विशेष कामना रखने वाला, विकल ; 8. अन्धकार, अंधेरा ; 9. लाली ; 10. आकाश, गगन, आसमान ; 11. पक्का, स्थिर, नित्य, अचल ; 12. तुरन्त पैदा हुआ ; 13. कली ; 14. फूल ; 15. कोयल ; 16. पपीहा ; 17. सुखद होना ।

(08-01-2010)
बुलन्दशहर

30. पग धरते ही बन जाते.......

पग[1] धरते ही बन जाते, जाने कितने ही पुण्यधाम[2],
ओ महा-आत्मा[3] ओ नितांत[4], शत-शत[5] प्रणाम[6], शत-शत प्रणाम ।

गहरी निद्रा[7] में सोया था, जब भारतवर्ष का जन-चेतन[8],
नव[9] भोर[10] भरी नव आस[11] भरी, जागे सबके सब अन्तर्मन[12] ।
ओ महायशस्वी[13] ओ अभ्रांत[14], शत-शत प्रणाम शत-शत प्रणाम,
ओ महा-आत्मा ओ नितांत, शत-शत प्रणाम, शत-शत प्रणाम ।

सत्य[15]-अहिंसा[16] और शुचिता[17], निर्भयता[18] करुणा[19] मनाधार[20],
आगे-आगे बढ़ते जाते, पीछे चल देता जन-अपार[21] ।
ओ दृढ़निश्चयी[22] ओ अश्रांत[23], शत-शत प्रणाम शत-शत प्रणाम,
ओ महा-आत्मा ओ नितांत, शत-शत प्रणाम, शत-शत प्रणाम ।

कभी सत्याग्रह[24] कभी असहयोग[25], कभी स्वाबलंब[26] कभी सर्वोदय[27],
भारत छोड़ो[28] कभी स्वतंत्रता[29], कभी आत्मशुद्धि[30] कभी अंत्योदय[31] ।
ओ सन्यासी[32] ओ सुशांत[33], शत-शत प्रणाम शत-शत प्रणाम,
ओ महा-आत्मा ओ नितांत, शत-शत प्रणाम, शत-शत प्रणाम ।

युग[34] ने कितनी ही करवट लीं, ऋतुओं[35] ने बदले कई वेश[36],
ऐसे कब कोई कह पाया, 'मेरा जीवन मेरा संदेश' ।
ओ मनुजश्रेष्ठ[37] ओ अक्लांत[38], शत-शत प्रणाम शत-शत प्रणाम,
ओ महा-आत्मा ओ नितांत, शत-शत प्रणाम, शत-शत प्रणाम ।

1. पैर ; 2. मंगलकारक देवस्थान, तीर्थ स्थान ; 3. महान् आत्मा ; 4. असाधारण, अत्यधिक, बिल्कुल ; 5. असंख्य, सौ ; 6. नत-मस्तक होकर अभिवादन, झुकना, नत होना ; 7. नींद ; 8. सर्वसाधारण का अन्तःकरण ; 9. नवीन, नया ; 10. सुबह ; 11. आशा ; 12. मन की भीतरी चेतना ; 13. सुख्यात कीर्तिमान् ; 14. भ्रमरहित, स्थिर ; 15. सच, यर्थाथ, यथातथ्य, विश्वस्त ; 16. मन, वचन कर्म से किसी को दुःख न देना, किसी जीव को न मारना ; 17. शुचि होने का भार, निष्कपटता, निर्मलता ; 18. निडरता,

भयहीनता ; 19. दया, रहम ; 20. मन का आधार, मन का सहारा, सम्बन्ध ; 21. असंख्य जनता ; 22. मज़बूत इरादे वाला ; 23. अथक, न थका हुआ ; 24. सत्य हेतु किया गया हठ, अहिंसात्मक कार्यवाही ; 25. सहयोग का अभाव, मिलकर काम न करना, सत्ता का साथ न देना ; 26. आत्मनिर्भर, जो अपना ही भरोसा करे ; 27. सबकी उन्नति ; 28. 8 अगस्त 1942 का नारा ; 29. आज़ादी, स्वाधीनता ; 30. आत्म संस्कार ; 31. सबसे आखिरी वाले की उन्नति ; 32. त्यागी और विरक्त ; 33. अत्यन्त शान्त ; 34. काल, समय ; 35. मौसम ; 36. पोशाक, पहनावा ; 37. उत्तम मनुष्य, अत्यंत प्रिय मनुष्य ; 38. जो थका न हो ।

(16-01-2010)
बुलन्दशहर

31. नयनों से नयना मिल जाएँ......

नयनों[1] से नयना मिल जाएँ, पुलकन भर लें खिल-खिल जाएँ,
जी चाहे फिर जी भर देखें, देखें और फिर देखें जाएँ !

मन्थर-मन्थर[2] मृदु[3] लहरों पर, झिलमिल-झिलमिल किरणें भरकर,
स्वप्नों[4] की नौका[5] पर तैरें, तैरें और फिर तैरे जाएँ ।

कंधे पर उसके सिर रखकर, हाथों को हाथों में गहकर[6],
सतरंगी झूले पर झूलें, झूलें और फिर झूले जाएँ ।

स्मति[7] की रेखा भर मुख पर, कंपन भर लें अधराधर[8] पर,
मौन मुखर[9] हो जब भी बोलें, बोलें और फिर बोले जाएँ ।

चंचल-चंचल चितवन[10] भरकर, उठती-गिरती श्वासों के स्वर[11],
दिल की लय के संग-संग गाएँ, गाएँ और फिर गाए जाएँ ।

कितना सुखमय सुन्दर जीवन, अर्थ भरे हर कण और हर तृण[12],
संसृति[13] की हर गति पर झूमें, झूमें और फिर झूमे जाएँ ।

1. आँखों ; 2. मंद-मंद, धीमे-धीमे ; 3. कोमल ; 4. सपनों ; 5. नाव ; 6. कसकर पकड़ना ; 7. मुस्कराहट, मंदहास्य ; 8. नीचे का ओंठ ; 9. वाक्पटु, बातूनी ; 10. प्रेम पूर्वक देखने का ढंग, कटाक्ष, दृष्टि, निगाह ; 11. आवाज़, कंठ ध्वनि ; 12. तिनका, घास, खर-पतवार ; 13. संसार ।

(24-01-2010)
बुलन्दशहर

32. तुषार......

तुषार मुझ पर छा गया है,
तन पर, मन पर ।

न दिखाई पड़ते हैं अब गाँव,
किलकारी मारते हुए बच्चे,
सुन्दर औरतें, मेहनतकश किसान,
लहलहलाती फसलें, पगडण्डी,
शिवालय, पोखर, मकान ।

हाथों को मिलाकर मैं अब,
किस सूर्य का करूँ वंदन ।
हाथों को उठाकर मैं अब,
किस भविष्य का करूँ अभिनन्दन ।

इस नीरवता में मेरी आत्मा,
उस काले प्रेत से दिखने वाले,
विशालकाय वृक्ष में समा गई है ।
जिसे निश्चेष्ट होकर,
पतझड़ की प्रतीक्षा है ।

मृत्यु,
श्वेत धवल या घनी श्यामल,
कौन जाने ?

तुषार मुझ पर छा गया है ।
तन पर, मन पर ।

(27-01-2010)
बुलन्दशहर

33. अग्नि भर ले श्वास-श्वास.......

अग्नि[1] भर ले श्वास-श्वास,
उर्ध्व[2] बाहु[3] मुष्टि[4] तान ।
कर निनाद[5], कर निनाद,
कर निनाद, कर निनाद ।

दृष्टि[6] में भरे अभय[7],
हृदय[8] भरे हुए सदय[9] ।
आँधी चक्रवात[10] से,
उठे कि जैसे हो प्रलय[11] ।

शीश[12] गर्व[13] से तने,
जमे हुए धरा[14] पे पाँव ।
कर निनाद, कर निनाद,
कर निनाद, कर निनाद ।

पी ले सब कलुष-गरल[15],
घृणा समुद्र का अतल[16] ।
मुस्करा दे यह धरा,
बने सुखी जगत-सकल[17] ।

रुद्र[18] भी है, तू ही शिव[19],
तू ही मुक्ति[20], तू ही त्राण[21] ।
कर निनाद, कर निनाद,
कर निनाद, कर निनाद ।

बँधे किसी न पाश[22] से,
रुके किसी न ठाठ[23] से ।
पुष्प[24] से खिले रहे,
भरे रहे सुवास[25] से ।

सहज सभी हों सर्वदा[26],
हर्ष[27], शोक[28], धूप, छाँव ।
कर निनाद, कर निनाद,
कर निनाद, कर निनाद ।

यही तो एक सत्य है,
तू अनघ[29] अमर्त्य[30] है ।
पथ[31] भी है तू ही स्वयं[32],
तू ही अपना लक्ष्य[33] है ।

क्यों भरे विषाद[34] मन,
क्यों बुझे-बुझे से प्राण ।
कर निनाद, कर निनाद,
कर निनाद, कर निनाद ।

1. आग ; 2. ऊपर उठा होना ; 3. भुजा, बाँह ; 4. मुट्ठी, घूँसा, मुक्का ; 5. जोर की आवाज़ ; 6. निगाह, नज़र, अवलोकन ; 7. निडर, भयरहित, निर्भयता, निरापद ; 8. मन, दिल ; 9. दयालु ; 10. बवंडर, बगूला ; 11. विलीनता, लय, नाश ; 12. सिर ; 13. अहंभाव, घमंड, अभिमान ; 14. पृथ्वी, ज़मीन ; 15. विष, ज़हर, मैल, अपवित्रता, पाप, विकार ; 16. तल रहित, बिना पैंदे के, अथाह, बहुत गहरा ; 17. सारा संसार, सारी दुनियाँ ; 18. भयंकर, डरावना, शिव का एक रूप ; 19. कल्याण, मंगल, शुभ, भाग्यवान, भगवान शंकर ; 20. स्वतंत्र होने की अवस्था, आज़ादी, खुला ; 21. रक्षा, बचाव, सहायता, मदद, आश्रय ; 22. रस्सी से बनाया घेरा, बंधन, वह वस्तु जिससे कोई वस्तु आदि फँसाई जा सके ; 23. रक्षा, रोक ; 24. फूल ; 25. सुगंध ; 26. हमेशा, सदा, सब काल में ; 27. प्रसन्नता, खुशी ; 28. दुःख ; 29. पवित्र, निरापद, शोकहीन, पुण्य ; 30. अमर ; 31. रास्ता, मार्ग ; 32. खुद ; 33. उद्देश्य, निशान ; 34. दुःख, अवसाद, उदासी, ग़म, नैराश्य, उत्साहहीनता ।

(31-01-2010)
बुलन्दशहर

34. यदि कहीं भी स्वर्ग है.......

यदि कहीं भी स्वर्ग[1] है, स्वर्ग है यहीं विशेष[2],
मेरा देश, मेरा देश, मेरा देश, मेरा देश ।
गा रहे मनुज[3] यही, देव[4]-दैत्य[5] यक्ष[6] शेष[7],
मेरा देश, मेरा देश, मेरा देश, मेरा देश ।

नील[8]-हरित[9] जलधि[10] रंग, अविरल[11] उच्छल[12] तरंग[13],
हरीतिमा[14] सजाए भूमि[15], पीत[16], लाल, श्याम[17] संग ।
हिम[18] ढके उत्तुंग[19] तुंग[20], सज रहे हैं सौम्य[21] श्वेत[22],
मेरा देश, मेरा देश, मेरा देश, मेरा देश ।

आस[23] से भरे प्रभात[24], राग[25]-रंग[26] साथ-साथ,
खिलखिलाए पुष्प[27]-पुष्प, हर दिशा भरे सुवास[28]।
वृक्ष[29] गुल्म[30] झूमते, लहलहाते खेत-खेत,
मेरा देश, मेरा देश, मेरा देश, मेरा देश ।

स्वच्छ[31] सलिल[32] भर प्रवाह[33], सरित्[34] करें मृदुल[35] नाद[36],
झर-झर कर झरता नीर[37], ऊँचे-ऊँचे जलप्रपात[38] ।
कलरव[39] कर विहग[40]-वृन्द[41], दे रहे यही संदेश[42],
मेरा देश, मेरा देश, मेरा देश, मेरा देश ।

1. देवलोक, आकाश ; 2. असाधारण, असामान्य, विपुल, विलक्षण, विचित्र ; 3. मनुष्य ; 4. सुर, स्वर्ग व दिव्य शक्ति संपन्न अमर प्राणी ; 5. असुर, राक्षस ; 6. कुबेर के गणों और उनकी निधियों की रक्षा करने वाली एक प्रकार की देवयोनि, कुबेर, कुबेर के सेवक ; 7. बाकी, बचा हुआ, छोड़ा हुआ ;

8. नीला ; 9. हरा, पीला, भूरे या बादामी रंग का ; 10. समुद्र ; 11. लगातार, मिला हुआ या सटा हुआ, घना, अविरत ; 12. उछलने वाला, लहराता हुआ ; 13. हिलोर, पानी की लहर, उमंग, उछाल ; 14. हरियाली, हरापन ; 15. धरती, पृथ्वी, ज़मीन ; 16. पीला, पीले रंग का ; 17. काला ; 18. बर्फ, पाला, तुषार ; 19. बहुत ऊँचा ; 20. पर्वत, बहुत ऊँचा, उग्र, तीव्र, प्रधान ; 21. सुन्दर, रमणीय, चमकीला, कान्तिमान, शीतल और स्निग्ध, मृदुल, कोमल ; 22. उजला, धवल, सफेद, गोरा, निर्मल ; 23. आशा ; 24. सबेरा, तड़का, प्रातःकाल ; 25. अनुराग, प्रेम, इच्छा, कामना ; 26. मनोविनोद हेतु की गई क्रीड़ा, वर्ण, रौनक, शोभा ; 27. फूल ; 28. सुगन्ध ; 29. पेड़, तरूवर ; 30. झाड़ी, सैन्यदल ; 31. साफ़ ; 32. पानी, जल ; 33. बहाव ; 34. नदी ; 35. मधुर, कोमल, मुलायम ; 36. आवाज़ ; 37. पानी, जल ; 38. ऊँचे से गिरने वाला प्राकृतिक झरना ; 39. मंद एवं मधुर स्वर ; 40. पक्षी, पंछी ; 41. समुह ; 42. खबर, समाचार, कथन, आज्ञा, विचार, आदेश ।

(05-02-2010)

बुलन्दशहर

35. समय की गति सदा.......

समय की गति सदा अटल[1], जाए फिर न आए पल,
चल रे चल रे चल रे चल, चल रे चल रे चल रे चल ।
कभी घिरे जो घोर तम,
राह भी दिखे जो कम ।
पाँव धरना, फूँक-फूँक,
धीरे से सँभल-सँभल ।

चल रे चल रे चल रे चल, चल रे चल रे चल रे चल,
चल रे चल रे चल रे चल, चल रे चल रे चल रे चल ।
कभी खिला बसंत हो,
दिशा-दिशा सुगंध हो ।
भरना इसको श्वास-श्वास,
झूमना मचल-मचल ।

चल रे चल रे चल रे चल, चल रे चल रे चल रे चल,
चल रे चल रे चल रे चल, चल रे चल रे चल रे चल ।
कभी न साथ संग हो,
नितांत[2] तू निसंग[3] हो ।
आस स्वप्न साथ-साथ,
संग ले निकल-निकल ।

चल रे चल रे चल रे चल, चल रे चल रे चल रे चल,
चल रे चल रे चल रे चल, चल रे चल रे चल रे चल ।

कभी जो मीत साथ हो,
फुल्ल[4] प्राण-गात[5] हो ।
नेह[6] राग[7] अंग-अंग[8],
दृष्टि[9] ले विमल-विमल[10] ।

चल रे चल रे चल रे चल, चल रे चल रे चल रे चल,
चल रे चल रे चल रे चल, चल रे चल रे चल रे चल ।

1. अचल, नित्य, पक्की, स्थिर ; 2. बिल्कुल, असाधारण, अत्यधिक ; 3. अकेला, बिना साथ का ; 4. प्रसन्न, विकसित ; 5. प्राण-शरीर ; 6. स्नेह, प्रेमभाव, प्रेम ; 7. अनुराग, प्रेम, इच्छा, कामना, गान का प्रकार, सुखद अनुभूति ; 8. शरीर के विभिन्न अवयव (हाथ, पैर, मुँह, कान आदि), अंश, शाखा ; 9. नज़र, निगाह, मन, विचार, अवलोकन ; 10. साफ और पारदर्शक, मलरहित, निर्मल ।

(09-02-2010)
बुलन्दशहर

36. भारतीय अस्मिता का शुभ.......

भरतीय अस्मिता[1] का शुभ[2] प्रतीक[3] यह तिरंग[4],
शक्ति[5] शौर्य[6] वीरता[7] का शुभ प्रतीक यह तिरंग ।

ऊर्ध्व[8] रंग केसरी, कह रहा हमें पुकार,
उत्सर्ग[9] कर दो देश पर, सर्वस्व[10] प्राण भी निसार[11] ।
एकता अखंडता[12] का शुभ प्रतीक यह तिरंग,
शक्ति शौर्य वीरता का शुभ प्रतीक यह तिरंग ।

श्वेत[13] रंग मध्य[14] में, दे रहा यही संदेश,
सत्य[15] से भरें हृदय शान्तिमय हमारा देश ।
शुचिता[16] और सहिष्णुता[17] का शुभ प्रतीक यह तिरंग,
शक्ति शौर्य वीरता का शुभ प्रतीक यह तिरंग ।

मध्य ही सजा हुआ, गहरा नीला धर्मचक्र[18],
चतुर्विंशति[19] अराओं[20] से निरत[21] सजाए नव[22] दिवस[23] ।
ऋत[24], नियम[25], नित्यता[26] का शुभ प्रतीक यह तिरंग,
शक्ति शौर्य वीरता का शुभ प्रतीक यह तिरंग ।

हरित[27] रंग अध[28] भरे, हरा भरा हमारा देश,
आह्लाद[29] से भरे कृषक[30] लहलहाते अपने खेत ।
समृद्धि[31] संपन्नता[32] का शुभ प्रतीक यह तिरंग,
शक्ति शौर्य वीरता का शुभ प्रतीक यह तिरंग ।

1. अहंभाव, अपनी सत्ता का भाव, आपा, अहंकार, अभिमान ; 2. मंगलमय, कल्याणकर ; 3. चिन्ह, निशान, पता ; 4. तिरंगा ; 5. ताकत, पराक्रम, बल, योग्यता, क्षमता ; 6. शूरता, वीर होने का भाव ; 7. बहादुर, श्रेष्ठ, शूर होने का भाव ; 8. ऊपरी, ऊपर ; 9. त्यागना, बलिदान ; 10. सभी कुछ ; 11. निछावर, बलिदान, बलि ; 12. खंडित न होने वाला, सम्पूर्ण, अविभाज्य ; 13. सफेद, 14. बीच ; 15. सच, यथार्थ, यथातथ्य, विश्वस्त ; 16. पवित्रता, निष्कपटता, शुद्ध, स्वच्छ, साफ ; 17. सहनशीलता ; 18. धर्म का पहिया ; 19. चौबीस ; 20. तीलियाँ ; 21. लगातार, अनवरत ; 22. नया ; 23. दिन ; 24. निश्चित विधान, सत्य, सच्चा, मोक्ष ; 25. विधान के अनुरूप नियन्त्रण, रीति, पद्धति, प्रतिज्ञा, क़ायदा ; 26. अविनाशी, शाश्वत, निरन्तर, अनश्वरता ; 27. हरा ; 28. नीचे, तले ; 29. हर्ष, खुशी ; 30. किसान ; 31. सम्पन्न, धनवान, सशक्त, अधिक, बहुत, ऐश्वर्य, अमीरी ; 32. भली-भाँति युक्त, धनी, पूर्ण, सिद्ध, सम्पन्न होने का भाव ।

(17-02-2010)
बुलन्दशहर

37. चल तिमिर में दीप.......

चल तिमिर[1] में दीप[2] धर दें,
चल तिमिर में दीप धर दें ।

दीप जिसकी लौ अकंपित[3],
ले जले जो ज्वाल[4] अक्षिति[5] ।
हो रहे सब दृष्टिगोचर[6],
दृष्टि[7] में स्फीति[8] भर दें ।

चल तिमिर में दीप धर दें,
चल तिमिर में दीप धर दें ।

काल[9] भर ले शुभ[10] कलाएँ[11],
हों प्रहर्षित[12] सब दिशाएँ ।
दिक्[13] का कण-कण हो तरंगित
नभ[14] में नव[15] संगीत भर दें ।

चल तिमिर में दीप धर दें,
चल तिमिर में दीप धर दें ।

अश्रु[16] से भरते नयन[17] हैं,
सूने-सूने तृषित[18] मन हैं ।
डूब कर किसी वेदना[19] में,
राग-रंग[20] और गीत भर दें ।

चल तिमिर में दीप धर दें,
चल तिमिर में दीप धर दें ।

आज अब कुछ बोलना क्या,
आज अब कुछ तोलना क्या ।
यह धरा[21] कल स्वर्ग होगी,
आ हृदय[22] में प्रीति[23] भर दें ।

चल तिमिर में दीप धर दें,
चल तिमिर में दीप धर दें ।

1. अंधकार, अँधेरा ; 2. दीपक, दीया ; 3. जो कँपा न हो ; 4. ज्वाला ; 5. अनश्वर ; 6. स्पष्ट दिखाई पड़ने वाला, देखा हुआ ; 7. अवलोकन, निगाह, नज़र, ज्ञान, मत, विचार, अभिप्राय, देखने की दृष्टि ; 8. विस्तार, वृद्धि, प्राचुर्य, अधिकता ; 9. समय ; 10. कल्याणकर, मंगलमय, अच्छा ; 11. हुनर, परिवर्तनशीलता, चित्र, नाट्य, प्रकाश का भाव ; 12. अत्यधिक प्रसन्नता ; 13. स्थान, तरफ, दिशाएँ ; 14. आकाश ; 15. नवीन, नया ; 16. आँसू ; 17. आँखें ; 18. दुखी, व्यग्र, क्लेशित, विकल ; 19. कष्ट, व्यथा ; 20. आनन्द मंगल, आनन्द और खुशी का उत्सव ; 21. पृथ्वी ; 22. अन्तःकरण ; 23. प्यार, प्रेम, हर्ष, आनन्द ।

(20-02-2010)
बुलन्दशहर

38. आकुल हो कभी हर्षित.......

आकुल[1] हो कभी हर्षित[2] हो मन,
हर पल मिलने को बेचैन ।
दृष्टि[3] में मेरी छवि[4] उसी की,
सोचूँ मैं उसको दिन-रैन[5] ।
सोचूँ मैं उसको दिन-रैन ।

मुख मंडल[6] है जैसे सुधाकर[7],
झरे चंद्रिका[8] झर-झर-झर ।
काले-काले केश[9] घनेरे,
मदिरम्-मदिरम्[10] उसके नैन[11] ।
सोचूँ मैं उसको दिन-रैन ।

आर्द्र[12] अधर[13] कंपन भर ऐसे,
रक्तिम[14] पाटलि[15] पँखुडी[16] जैसे।
दामिनी[17] सी दमके[18] दंतावली[19],
मधुरिम-मधुरिम[20] उसके बैन[21] ।
सोचूँ मैं उसको दिन-रैन ।

सुरभित[22] मोहक[23] चन्दन सा तन[24],
सौन्दर्य[25] भरे, शीतलता[26] से मन।
चाल है उसकी गजगामिनि[27] सी,
मन्थर-मन्थर[28] उसका गैन[29] ।
सोचूँ मैं उसको दिन-रैन ।

1. परेशान, बेचैन, उतावला, अव्यवस्थित ; 2. प्रसन्नमय, रोमांचित, प्रसन्नता, हर्ष ; 3. नज़र, निगाह, मन, विचार, अवलोकन ; 4. शोभा, सुंदरता, तस्वीर, चित्र ; 5. दिन-रात ; 6. चेहरा, मुँह ; 7. चन्द्रमा, सोम ; 8. चाँदनी, ज्योत्सना, कौमुदी ; 9. बाल ; 10. नशीले, मद से भरे हुए ; 11. आँखें ; 12. गीला, तरल, नभ ; 13. नीचे का ओंठ, नीचा, नीचे का ; 14. लाल, लाल रंग लिए हुए ; 15. गुलाब, शतपत्री ; 16. फूल की पत्ती ; 17. बिजली, तड़ित ; 18. चमकना ; 19. दाँतों की पंक्ति ; 20. कोमल, मुलायम ; 21. बात, वचन, बोला ; 22. सुगंधित, सुवासित ; 23. लुभावना, मोह उत्पन्न करने वाला ; 24. शरीर, बदन ; 25. सुंदरता, खूबसूरती ; 26. ठंडक ; 27. हाथी के समान चलने वाली ; 28. धीरे-धीरे, मंद-मंद ; 29. गमन, चलना ।

(24-02-2010)

बुलन्दशहर

39. क्यों हुए हो आज तंद्रिल.......

क्यों हुए हो आज तंद्रिल[1], क्यों श्लथन[2] का है बहाना,
है अभी तो दूर मंजिल, है अभी चलते ही जाना ।

गगन[3] भृकुटी[4] तान कर आँधी प्रलय[5] ले थरथराए,
या धरा[6] हो जाए कंपित, ये अचल[7] भी डगमगाए ।
फिर भी राके क्या रुकेगा, तेरा चलना तू बताना,
है अभी तो दूर मंजिल, है अभी चलते ही जाना ।

रोक लेगी क्या तुम्हें, फूलों भरे तरुवर[8] की छाया,
क्या बनेगी कारा[9] फिर, चितवन भरी कोई मृदुल[10] काया[11] ।
कर रही क्रन्दन[12] मनुजता[13], क्या मधुप[14] का गुनगुनाना,
है अभी तो दूर मंजिल, है अभी चलते ही जाना ।

अग्नि[15] भर भरपूर उर[16] में, आँखों में भरपूर पानी[17],
श्वास[18] में भर ले ऋचाएँ[19], यज्ञ[20] सी जीवन कहानी ।
कंटकों[21] के पंथ[22] पर है, फूलों की चादर बिछाना,
है अभी तो दूर मंजिल, है अभी चलते ही जाना ।

गायेंगे तब सब मनुज[23] मिल, तेरे जीवन की ही गाथा[24],
हार भी बन जाएगी तब, तेरी जय की ही पताका[25] ।
वर तुम्हें अमर्त्य[26] का है, यह कभी मत भूल जाना,
है अभी तो दूर मंजिल, है अभी चलते ही जाना ।

1. हल्की नींद, ऊंघाई, थकान, आलस्य ; 2. ढ़ीला छोड़ना, शिथिलीकरण ; 3. आकाश, आसमान ; 4. भौंह ; 5. नाश, विलीनतालय, भयंकर, बरबादी ; 6. पृथ्वी, धरती ; 7. पर्वत, पहाड़, गिरि ; 8. पेड़, वृक्ष ; 9. बंधन ; 10. कोमल, मुलायम ; 11. शरीर, देह ; 12. विलाप ; 13. मानवता ; 14. भौंरा, शहद की मक्खी ; 15. आग ; 16. हृदय, छाती ; 17. जल, आँसू ; 18. साँस ; 19. पद्य में रचा हुआ मंत्र, स्त्रोत ; 20. शुभ अनुष्ठान या काम, हवन पूजन युक्त एक वैदिक कृत्य, धार्मिक कृत्य ; 21. काँटों ; 22. रास्ता मार्ग पर ; 23. मनुष्य, मानव ; 24. गीत-कथा, कथा, वृत्तांत, प्रशंसा, स्तुति ; 25. ध्वजा, झण्डा, झंडी ; 26. अमरता, अनश्वर, दिव्य ।

(27-02-2010)
बुलन्दशहर

40. जब भी मेरे अन्तर्मन ने.......

जब भी मेरे अन्तर्मन[1] ने, गीत वफ़ा के दोहराए,
स्मृति[2] में तुम ही आए, स्मृति में तुम ही आए ।
जब भी मेरे अन्तरतम[3] में, स्वप्न[4] सलोना रच जाए,
स्मृति में तुम ही आए, स्मृति में तुम ही आए ।

नयनों[5] से नयनों की भाषा, मधुर मिलन की चिर[6] अभिलाषा[7],
पास न मेरे तुम जब होते, दर्द ही देता मुझको दिलासा[8] ।
जब भी मैंने चुपके-चुपके, अपने आँसू छलकाए,
स्मृति में तुम ही आए, स्मृति में तुम ही आए ।

श्वासों[9] से श्वासों के बंधन, विश्वासों के दृढ़[10] आलम्बन[11],
उठते-गिरते गिरते-उठते, नेह[12] भरे दिल के स्पन्दन[13] ।
जब भी बन्द हुईं ये पलकें, मन ही मन हम हर्षाए[14],
स्मृति में तुम ही आए, स्मृति में तुम ही आए ।

सिहरन[15] भर देते स्पर्शन[16], मोहक[17] मादक[18] कोमल[19] चुबंन,
काल[20] की गति[21] भी थिर-थिर[22] जाए, भाव[23] भरे ऊसन[24] आलिंगन[25] ।
हँसते-हँसते जब हम रोए, रोते-रोते मुस्काए,
स्मृति में तुम ही आए, स्मृति में तुम ही आए ।

1. मन की भीतरी चेतना ; 2. याद, स्मरण ; 3. मर्म, हृदय, दिली गहराई, आत्मीय, निकटतम ; 4. सपना ; 5. आँखें, नेत्र ; 6. दीर्घकालीन, जो बहुत दिनों तक बना रहे, दीर्घ, बहुत ; 7. कामना, मन की चाह ; 8. धीरज, ढाढ़स ; 9. साँसें ; 10. मज़बूत, पक्का, प्रगाढ़, विचलित न होने वाला ; 11. नींव, सहारा, भाव का आधार ; 12. स्नेह, प्रीति, प्यार ; 13. धड़कन, गति, कंपन, फड़कना ; 14. प्रसन्न होना, खुश होना ; 15. कँपकँपी, रोमांच, सिहरने की क्रिया ; 16. छूने की क्रिया, संबंध, लगाव ; 17. मोह उत्पन्न करने वाला, लुभावना, मोहित करने वाला ; 18. नशीला ; 19. मुलायम, मधुर, मनोहर, नाज़ुक ; 20. समय ; 21. चाल ; 22. स्थिर, गतिहीन, अचंचल, एक ही स्थिति मे रहने वाला ; 23. भावना ; 24. गरम, तप्त ; 25. गले लगना, परिरंभण ।

(07-03-2010)
बुलन्दशहर

41. जीवन पथ पर तेरा मिलना.......

जीवन पथ[1] पर तेरा मिलना, विधि[2] का एक वरदान[3] मुझे,
पथ पर तेरे संग-संग चलना, विधि[4] का ही सम्मान मुझे ।

मेरी हर घनघोर निशा[5] में, चन्द्रकिरण[6] बन तुम छितराए,
आशा की अरुणाई[7] भरकर, मेरे नभ[8] पर तुम ही छाए ।
स्मिति[9] भरकर तेरा खिलना, दे जाता मुस्कान मुझे,
जीवन पथ पर तेरा मिलना, विधि का एक वरदान मुझे ।

जब-जब मुझ पर धूप तपी तब तुमने ही आँचल फैलाया,
तुम ही तो तब बनकर छाए, बदली की एक शीतल छाया ।
तेरी ही पलकों में बसना, मेरी बस पहचान मुझे,
जीवन पथ पर तेरा मिलना, विधि का एक वरदान मुझे ।

जब भी पथ पर मैं पग धरता, पुष्पों के सम[10] बिछ जाते तुम,
पल्लव[11] पुष्पित[12] तरुवर[13] के सम, लहराते तुम छा जाते तुम ।
तेरी ही स्मृति[14] में सजना, लगता है अभिराम[15] मुझे,
जीवन पथ पर तेरा मिलना, विधि का एक वरदान मुझे ।

इन अधरों[16] पर तुम ही हो जो गीत ग़ज़ल कविता बन आए,
तुम ही स्तुति[17] तुम ही प्रार्थना[18], स्वस्ति[19] वचन[20] से तुम दोहराए ।
श्वासों[21] में मेरी ही पलना[22], तेरा ही प्रतिदान[23] मुझे,
जीवन पथ पर तेरा मिलना, विधि का एक वरदान मुझे ।

1. रास्ता, मार्ग, राह ; 2. व्यवस्था आदि का ढंग, प्रणाली, कानून, भाग्य, ब्रह्मा ; 3. देवता, ऋषियों आदि से प्राप्त वर, फलसिद्धि, शुभ फलदायिनी ; 4. भाग्य ; 5. रात, रात्रि ; 6. चन्द्रमा की किरण ; 7. सुर्खी, लाल रंग का, प्रातः कालीन सूर्य, सूर्य का सारथी ; 8. आसमान, आकाश ; 9. मंदहास्य, मुस्कराहट ; 10. एकसा, सदृश, अभिन्न, बराबर ; 11. नया एवं कोमल पत्ता ; 12. फूलों से युक्त, उन्नत एवं समृद्ध ; 13. पेड़, वृक्ष; 14. याद, स्मरण ; 15. सुखद, अच्छा लगने वाला, मोहक, प्रसन्नता ; 16. ओंठ ; 17. प्रशंसा, स्तोत्र ; 18. निवेदन, भक्ति एवं श्रद्धा पूर्वक ईश्वर आदि से माँगना ; 19. कल्याण, मंगल, सुख, भला, मान्य ; 20. बात, वाणी, शपथ, बचन ; 21. साँसों ; 22. पाला पोसा जाना, पालित होना ; 23. वापस करना, बदले में दूसरी वस्तु देना, विनिमय ।

(12-03-2010)
बुलन्दशहर

42. तू ग़ज़ल भी मेरी है.......

तू ग़ज़ल[1] भी मेरी है, तराना[2] मेरा,
तू कहानी भी मेरी, फ़साना[3] मेरा ।

अपनी जुल्फ़ों[4] में काली घटाएँ लिए,
अपनी आँखों में लाखों अदाएँ लिए,
है कयामत[5] का ये मुस्कराना तेरा ।

तू ग़ज़ल भी मेरी है, तराना मेरा,
तू कहानी भी मेरी, फ़साना मेरा ।

कोई देखे कहे वल्लाह क्या बात है,
कोई देखे कहे चाँदनी रात है,
एक मैं ही नहीं हूँ दीवाना तेरा ।

तू ग़ज़ल भी मेरी है, तराना मेरा,
तू कहानी भी मेरी, फ़साना मेरा ।

कभी भूले से तुम जब चमन[6] में गए,
फूल सज़दे[7] में तेरे सभी झुक गए,
शुक्रिया-शुक्रिया[8] पास आना तेरा ।

तू ग़ज़ल भी मेरी है, तराना मेरा,
तू कहानी भी मेरी, फ़साना मेरा ।

ये फ़रिश्ते[9] खुदा से जो कुछ माँगते,
तुझसे कम-तुझसे ज्यादा भी क्या माँगते,
शुक्र[10] है कि ज़मी[11] आशियाना[12] तेरा ।

तू ग़ज़ल भी मेरी है, तराना मेरा,
तू कहानी भी मेरी, फ़साना मेरा ।

तुझको सोचूँ तो ये दिल धड़कने लगे,
तुझको देखूँ तो ये नब्ज़[13] थमने लगे,
बंद पलकें उठा के गिराना तेरा ।

तू ग़ज़ल भी मेरी है, तराना मेरा,
तू कहानी भी मेरी, फ़साना मेरा ।

1. उर्दू, फारसी कविता का एक प्रकार विशेष, प्रेमिका से वार्तालाप ; 2. अच्छे ढंग से गाए जाने वाला सुंदर गीत ; 3. कहानी, कथा, उपन्यास, वृत्तांत ; 4. केशपाश, बालों की लटें, अलकें ; 5. महाप्रलय ; 6. वाटिका, उद्यान ; 7. माथा टेकना, सर झुकाना, ज़मीन पर माथा टेक कर प्रार्थना करना ; 8. धन्यवाद ; 9. देवदूत, देवता, लोकोपकारी तथा सात्विक वृतिवाला व्यक्ति ; 10. धन्यवाद, कृतज्ञता ; 11. ज़मीन ; 12. बसेरा ; 13. नाड़ी ।

(14-03-2010)
बुलन्दशहर

43. राग-रंग ले के संग.......

राग-रंग ले के संग,
ले तरंग ले उमंग,
खेलूँ आज तेरे संग ।
होली मैं होली, होली मैं होली,
होली है होली, होली है होली ।
लाल-लाल ले गुलाल,
गोरे-गोरे तेरे गाल,
कर दूँ आज लाल-लाल ।
होली है होली, होली है होली,
होली है होली, होली है होली ।
खिसक जाए इधर-उधर,
चोली तेरी उड़े चुनर,
देख रहीं तिरछी नज़र ।
होली है होली, होली है होली,
होली है होली, होली है होली ।
तेरे नैना जैसे बाण,
हों कटार हों कृपाण,
ले रहे हैं मेरे प्राण ।
होली है होली, होली है होली,
होली है होली, होली है होली ।
खिल रहे हैं अंग-अंग,
पी के साथ-साथ भंग,
नाच रहे संग-संग ।
होली है होली, होली है होली,
होली है होली, होली है होली ।

टेसू डाल रंग डाल,
होली का चढ़ा खुमार,
तू न अब इसे उतार ।

होली है होली, होली है होली,
होली है होली, होली है होली ।

बज रहे हैं तास-ढ़ोल,
गाली लगे प्यारे बोल,
झूम-झूम गा के बोल ।

होली है होली, होली है होली,
होली है होली, होली है होली ।

आज तेरे साथ-साथ,
फुल्ल-फुल्ल प्राण-गात,
धन्य-धन्य ओ रे फाग ।

होली है होली, होली है होली,
होली है होली, होली है होली ।

(15-03-2010)
बुलन्दशहर

44. जागा अनवरत रात भर.......

जागा अनवरत[1] रात भर, अब चैन से सोता तिमिर[2],
आँखों को मीड़े[3] प्रात[4] अब, अँगड़ाईयाँ[5] लेता है फिर ।
जाग रे अब जाग रे अब, जाग रे अब जाग अब,
जाग रे अब जाग रे अब, जाग रे अब जाग अब ।

जग उठे हैं पुष्प[6] सारे, खिलखिलाते बाग़ में,
जग रहे हैं कमल भी, मुँह खोलकर तालाब में ।
ऊँघते पंक्षी भी देखो, फड़फड़ाते अपने पर[7],
जाग रे अब जाग रे अब, जाग रे अब जाग अब ।

कूह-कूह कुहके कोयलिया, गा रही है गान भी,
पीहू-पीहू कहता पपीहा, ओ प्रिये अब मान भी ।
पुष्पों पर मँडराता भँवरा, गुनगुनाते उसके स्वर,
जाग रे अब जाग रे अब, जाग रे अब जाग अब ।

घाट पनघट[8] चूल्हा चौखट, अब सभी तो जागते,
रंग-बिरंगी तितलियों के, संग बालक भागते ।
जागती अब सारी धरती, सज रही धानी[9] चुनर[10],
जाग रे अब जाग रे अब, जाग रे अब जाग अब ।

1. लगातार, अविराम ; 2. अंधकार, अँधेरा ; 3. हथेलियों से मसलना, मसलना, गूँधना ; 4. सवेरा, प्रात:काल, सुबह ; 5. शरीर को तानना ; 6. फूल ; 7. पंख, डैना ; 8. पानी भरने का घाट ; 9. धान की हरी पत्तियों के रंग जैसा, हल्का हरा ; 10. चुन्नी ।

(17-03-2010)
बुलन्दशहर

45. प्रात में अभी देर है.......

प्रात[1] में अभी देर है, हो रहा है क्यों विकल[2],
धीर[3] धर मन धीर धर, धीर धर मन धीर धर ।

चेतना में बस रहे, जो सलोने[4] स्वप्न हैं,
हैं पुलक पुलकाई[5] सी, जिनमें तू अब मग्न है ।
धुल रहेंगे सब के सब, क्यों बहाता अश्रुजल[6],
धीर धर मन धीर धर, धीर धर मन धीर धर ।

तू अकेला तो नहीं, नभ[7] के तारे साथ हैं,
टिमटिमाते हैं सभी, मुस्कराते आप हैं ।
कर रहे मनुहार[8] सब, मुस्करा दे पल-दो-पल,
धीर धर मन धीर धर, धीर धर मन धीर धर ।

कह रही है यह निशा[9], मौन का यह गान[10] सुन,
लय से लय मिल जाए तो, फिर इसे अविराम[11] गुन ।
हो तरंगित मौन में, मौन में ही आज पल,
धीर धर मन धीर धर, धीर धर मन धीर धर ।

बहता समीरण[12] भी तेरे, कानों में आकर कह रहा,
छू ले मुझे कुछ बात कर, मैं भी अकेला बह रहा ।
मंजिल मेरी जाने कहाँ, जाने कहाँ है मेरा घर,
धीर धर मन धीर धर, धीर धर मन धीर धर ।

1. सवेरा, भोर ; 2. परेशान, व्याकुल ; 3. धीरज ; 4. सुन्दर, लावण्यमयी ; 5. रोमांच, कामना, वासना, प्रेम हर्ष आदि से गद्-गद् ; 6. आँसू ; 7. आकाश, आमसान ; 8. विनती, खुशामद, मनाने का ढंग, यत्न ; 9. रात, रात्रि ; 10. गीत, गाना ; 11. लगातार, निरन्तर ; 12. हवा ।

(18-03-2010)
बुलन्दशहर

46. चले तो फिर रुके नहीं.......

चले तो फिर रुके नहीं,
चल पड़े तो चल पड़े ।

श्वास-श्वास आस भर,
स्वप्न[1] राग[2] साथ भर ।
प्रशस्त[3] पुण्य[4] पंथ[5] पर,
शान से निकल पड़े ।

चले तो फिर रुके नहीं,
चल पड़े तो चल पड़े ।

ज्वार[6] भरते सिन्धु[7] से,
उग्र[8] ज्वाल[9] पुंज[10] से ।
आँधी चक्रवात[11] बन,
जब हुआ मचल पड़े ।

चले तो फिर रुके नहीं,
चल पड़े तो चल पड़े ।

कभी किसी की प्रार्थना[12],
कभी किसी की वेदना[13] ।
अश्रु[14] से भरे नयन[15],
मोम से पिघल पड़े ।

चले तो फिर रुके नहीं,
चल पड़े तो चल पड़े ।

व्योम[16] ने भरा तिमिर,
सामने अचल[17] अडिग[18] ।
सिर कभी झुके नहीं,
हम सदा सबल[19] पड़े ।

चले तो फिर रुके नहीं,
चल पड़े तो चल पड़े ।

1. सपना ; 2. अनुराग, प्रेम, इच्छा, कामना, सुखद अनुभूति ; 3. उत्तम, शुभ, प्रशंसा किया हुआ, प्रशंसा योग्य ; 4. पवित्र, शुभ, मंगलकारक ; 5. मार्ग, रास्ता, रीति, ढंग, धर्म, सम्प्रदाय ; 6. समुद्र के जल का ऊपर उठना ; 7. समुद्र, सागर ; 8. तेज, तीव्र, भयानक, क्रूर, रुद्र, सूर्य ; 9. आग की लपट, अग्नि शिखा ; 10. ढेर, राशि, समूह ; 11. बवंडर, बगूला ; 12. निवेदन, भक्ति एवं श्रद्धापूर्वक ईश्वर, देवता आदि से माँगना ; 13. व्यथा, कष्ट ; 14. आँसू ; 15. आँख ; 16. आकाश, आसमान, अन्तरिक्ष ; 17. पर्वत, पहाड़, चिरस्थायी, अटल ; 18. अटल, नित्य, स्थिर, पक्का ; 19. बलवान, ताक़तवर ।

(20-03-2010)

बुलन्दशहर

47. मेरे मन मेरे मन.......

मेरे मन मेरे मन, आज क्यों है विकल[1],
क्यों धुँआ सा भरे, मेरे नयना[2] सजल[3] ।

कल तो था तू खिला मुस्कराता हुआ,
था मधुप[4] सा कोई, गुनगुनाता हुआ ।

आज क्यों मौन सब, तेरे गीत-ओ-ग़ज़ल,
मेरे मन मेरे मन, आज क्यों है विकल ।

कोई टूटा कहीं, क्या है तारा कोई,
कोई रूठा कहीं, क्या है प्यारा कोई ।

क्या कोई छोड़कर, गया आगे निकल,
मेरे मन मेरे मन, आज क्यों है विकल ।

क्यों ये काली घटा, तुझ पे छाई हुई,
क्यों ये आँधी सी अब, तुझ पे आई हुई ।

ये तिमिर[5] क्यों बना, आज इतना सबल,
मेरे मन मेरे मन, आज क्यों है विकल ।

थपकियाँ दूँ तुझे, या दूँ लोरी सुना,
गोद में लूँ तुझे, दूँ मैं तुझको घुमा ।

मुझे कुछ तो बता, जो तू जाए सँभल,
मेरे मन मेरे मन, आज क्यों है विकल ।

1. व्याकुल, परेशान ; 2. आँखें ; 3. जल से युक्त, अश्रुपूरित ; 4. भौंरा, शहद की मक्खी ; 5. अंधकार, अँधेरा ।

(21-03-2010)
बुलन्दशहर

48. पथ भ्रान्त हूँ पथ खोजता.......

पथ[1] भ्रान्त[2] हूँ पथ खोजता, मुझे आ के राह दिखा तो दे,
छाया हुआ चहुँदिश[3] तिमिर, मेरा आ के दीप जला तो दे।

चलता रहा हूँ अब तलक,
बिन लक्ष्य[4] बिन उद्देश्य[5] के।
हारा-थका मैं हताश अब,
मेरा पंथ ओझल[6] दृष्टि[7] से।

मुझमें तनिक स्फूर्ति भर, मुझे आ के आस बँधा तो दे,
पथ भ्रान्त हूँ पथ खोजता, मुझे आ के राह दिखा तो दे।

रोके से भी रुकता नहीं,
मेरा अनवरत[8] यह रुदन[9]।
आँखें सदा रहतीं सजल[10],
दिन-रात झरते अश्रु-कण[11]।

आ सिर पे मेरे हाथ रख, मेरी थोड़ी पीर घटा तो दे,
पथ भ्रान्त हूँ पथ खोजता, मुझे आ के राह दिखा तो दे।

क्या ताल[12] क्या लय[13] विश्व[14] की,
मैंने अभी जाना नहीं।
क्या सुर[15] है क्या संगीत क्या,
मैंने यह पहचाना नहीं।

मैं भी मिला लूँ इससे लय, मुझे आ के इतना सिखा तो दे,
पथ भ्रान्त हूँ पथ खोजता, मुझे आ के राह दिखा तो दे।

मैं क्या करूँ जानूँ न अब,
युग[16] की तरह होते ये क्षण[17] ।
मेरा कौन है तेरे सिवा,
पल-पल पुकारे तुझको मन ।

मेरे हाथ में अँगुली थमा, मुझे थोड़ी दूर चला तो दे,
पथ भ्रान्त हूँ पथ खोजता, मुझे आ के राह दिखा तो दे ।

1. रास्ता, मार्ग ; 2. भ्रम में पड़ा हुआ, घबराया हुआ, व्याकुल, विकल ; 3. चारों दिशाओं में ; 4. निशान, अनुमान योग्य वस्तु, उद्देश्य ; 5. प्रयोजन, अभिप्राय योग्य ; 6. लुप्त, ग़ायब हुआ, छिपा हुआ, लुका हुआ ; 7. अवलोकन, निगाह, नज़र, देखने की शक्ति ; 8. लगातार, निरन्तर ; 9. रोना ; 10. जल से युक्त, अश्रुपूरित ; 11. आँसू ; 12. संगीत में नियत मात्राओं पर हथेली से स्वर उत्पन्न करना ; 13. सामंजस्य, गति, गाने का प्रकार, समा जाना, विलय हो जाना ; 14. संसार, दुनियाँ ; 15. स्वर, आवाज़, गति ; 16. पुराणानुसार काल का एक दीर्घ परिमाण, काल गणना के अनुसार कल्प के चार उप विभागों में से एक (जैसे- सत्ययुग, कलियुग आदि) ; 17. पल, निमेष, अवसर, मौका ।

(24-03-2010)
बुलन्दशहर

49. अल्लाह तू......

अल्लाह[1] तू, अल्लाह तू,
अल्लाह तू, अल्लाह तू ।

है मलिक[4] तू, कुद्दूस[5] तू,
है रहीम[3] तू, रहमान[2] तू ।
मुहैमिन[8] भी तू, मोमिन[7] भी तू,
है अज़ीज़[9] तू, है सलाम[6] तू ।

अल्लाह तू, अल्लाह तू,
अल्लाह तू, अल्लाह तू ।

बारी[13] भी तू, ख़ालिक[12] भी तू,
मुसव्विर[14] भी तू, जब्बार[10] तू ।
है मुतकब्बिर[11], है क़ह्हार[16] तू,
है वह्हाब[17] तू, ग़फ़्फ़ार[15] तू ।

अल्लाह तू, अल्लाह तू,
अल्लाह तू, अल्लाह तू ।

रज़्ज़ाक[18] तू, फ़त्ताह[19] तू,
है अलीम[20] तू, क़ाबिज़[21] भी तू ।
राफ़े[24] भी तू, है मोइज़्ज़[25] तू,
बासित[22] भी तू, ख़ाफ़िज़[23] भी तू।

अल्लाह तू, अल्लाह तू,
अल्लाह तू, अल्लाह तू ।

है मुज़िल्ल[26] तू, है हकम[29] भी तू,
है हलीम[33] तू, है बसीर[28] तू ।
है समीअ्[27] भी तू, है अ़द्ल[30] भी तू,
है लतीफ़[31] तू, है ख़बीर[32] तू ।

अल्लाह तू, अल्लाह तू,
अल्लाह तू, अल्लाह तू ।

है अज़ीम[34] तू, है मुक़ीत[40] तू,
है अ़ली[37] भी तू, है शकूर[36] तू ।
है हफ़ीज़[39] तू, है हसीब[41] तू,
है कबीर[38] तू, है ग़फ़ूर[35] तू ।

अल्लाह तू, अल्लाह तू,
अल्लाह तू, अल्लाह तू ।

है जलील[42] तू, है रक़ीब[44] तू,
वासे[46] भी तू, है करीम[43] तू ।
है वुदूद[48] तू, है मजीद[49] तू,
है मुजीब[45] तू, है हकीम[47] तू ।

अल्लाह तू, अल्लाह तू,
अल्लाह तू, अल्लाह तू ।

बाइस[50] भी तू है, वकील[53] तू,
है क़वी[54] भी तू, है शहीद[51] तू ।
है वली[56] भी तू, है मतीन[55] तू,
है हक़्क़[52] तू, है हमीद[57] तू ।

अल्लाह तू, अल्लाह तू,
अल्लाह तू, अल्लाह तू ।

मुहसी[58] भी तू, मुब्दी[59] भी तू,
मुहयी[61] भी तू, है मुईद[60] तू ।
है हैय्य[63] तू, है क़ैय्यूम[64] तू,
वाजिद[65] भी तू, है मुमीत[62] तू ।

अल्लाह तू, अल्लाह तू,
अल्लाह तू, अल्लाह तू ।

है मुआख़्ख़िर[72], है समद[68] तू,
है मुक़्तदिर[70], माजिद[66] भी तू ।
है मुक़द्दिम[71], अव्वल[73] भी तू,
वाहिदुलअहद[67], क़ादिर[69] भी तू ।

अल्लाह तू, अल्लाह तू,
अल्लाह तू, अल्लाह तू ।

वाली[77] भी तू, मुतआ़ली[78] तू,
है बर्र[79] तू, आख़िर[74] भी तू ।
है मुन्तक़िम[81], तव्वाब[80] तू,
बातिन[76] भी तू, ज़ाहिर[75] भी तू ।

अल्लाह तू, अल्लाह तू,
अल्लाह तू, अल्लाह तू ।

अ़फ़ुव्व[82] तू, है रऊफ़[83] तू,
मुग़नी[89] भी तू, माने[90] भी तू ।
मुक़सित[86] भी तू, अज़्ज़ार[91] तू,
है ग़नी[88] भी तू, जामे[87] भी तू ।

अल्लाह तू, अल्लाह तू,
अल्लाह तू, अल्लाह तू ।

है नूर[93] तू, नाफ़े[92] भी तू,
है सबुर[99] तू, बाक़ी[96] भी तू ।
है बदीअ्[95] तू, वारिस[97] भी तू,
है रशीद[98] तू, हादी[94] भी तू ।

अल्लाह तू, अल्लाह तू,
अल्लाह तू, अल्लाह तू ।

तू ही मालिक-उल्-मुल्क[84] है,
अल्लाह तू, अल्लाह तू ।
है जुल् जलालि-वल् इकराम[85] तू,
अल्लाह तू, अल्लाह तू ।

अल्लाह तू, अल्लाह तू,
अल्लाह तू, अल्लाह तू ।

1. अल्लाह (परमात्मा, परमेश्वर) ; 2. अर्-रहमान (बहुत दया करने वाला) ; 3. अर्-रहीम (बहुत कृपा करने वाला) ; 4. अल्-मलिक (सबका स्वामी) ; 5. अल्-कुद्दूस (अत्यन्त पवित्र) ; 6. अस्-सलाम (निष्कलंक/बेऐब) ; 7. अल्-मोमिन (ईमान देने वाला) ; 8. अल्-मुहैमिन (चौकसी करने वाला) ; 9. अल्-अज़ीज़ (अविजेय) ; 10. अल्-जब्बार (सबसे ज़बरदस्त, शक्तिमान) ; 11. अल्-मु-त-कब्बिर (बड़ाई और बुज़ुर्गीवाला) ; 12. अल्-खालिक (पैदा करने वाला) ; 13. अल्-बारी (जान डालने वाला) ; 14. अल्-मुस़व्विर (आकार देने वाला) ; 15. अल्-ग़फ़्फ़ार (क्षमा करने वाला) ; 16. अल्-क़हहार (सबको अपने वश में रखने वाला) ; 17. अल्-वह्हाब (सब कुछ देने वाला) ; 18. अर्-रज़्ज़ाक़ (रोज़ी देने वाला) ;

19. अल्-फ़त्ताह (कठिनाई दूर करने वाला) ; 20. अल्-अलीम (बहुत ज्ञानी) ; 21. अल्-क़ाबिज़ (रोज़ी बन्द करने वाला) ; 22. अल्-बासित (रोज़ी खोलने वाला) ; 23. अल्-ख़ाफ़िज़ (छोटा करने वाला) ; 24. अर्-राफ़े (ऊँचा करने वाला) ; 25. अल्-मोइज़्ज़ (इज़्ज़त देने वाला) ; 26. अल्-मुज़िल्ल (अपमानित करने वाला) ; 27. अस्-समीअ् (सब कुछ सुनने वाला) ; 28. अल्-बसीर (सब कुछ देखने वाला) ; 29. अल्-हकम (निर्णय करने वाला) ; 30. अल्-अ़द्ल (इन्साफ़ करने वाला) ; 31. अल्-लतीफ़ (कृपा करने वाला) ; 32. अल्-ख़बीर (जानकारी रखने वाला) ; 33. अल्-हलीम (धैर्यवान) ; 34. अल्-अज़ीम (अत्यन्त महान) ; 35. अल्-ग़फ़ूर (मुक्ति देने वाला) ; 36. अश्-शकूर (क़द्रदान) ; 37. अल्-अ़ली (सबसे ऊँचा) ; 38. अल्-कबीर (बहुत बड़ा) ; 39. अल्-हफ़ीज़ (सबका रक्षक) ; 40. अल्-मुक़ीत (सबको रोज़ी व शक्ति देने वाला) ; 41. अल्-हसीब (सबकी पूर्ति करने वाला) ; 42. अल्-जलील (बड़े व ऊँचे प्रभुत्व वाला) ; 43. अल्-करीम (बहुत कृपा करने वाला) ; 44. अर्-रक़ीब (बड़ी दृष्टि रखने वाला) ; 45. अल्-मुजीब (प्रार्थनाएँ स्वीकार करने वाला) ; 46. अल्-वासे (बहुत अधिक देने वाला) ; 47. अल्-हकीम (बुद्धिमान) ; 48. अल्-वुदूद (बड़ा प्रेम करने वाला) ; 49. अल्-मजीद (बड़ा महान) ; 50. अल्-बाइस (मुर्दों को जीवित करने वाला) ; 51. अश्-शहीद (हर जगह उपस्थित और देखने वाला) ; 52. अल्-हक़्क़ (सत्य) ; 53. अल्-वकील (कार्य सफ़ल करने वाला) ; 54. अल्-क़वी (बड़ा शक्तिमान) ; 55. अल्-मतीन (मज़बूत) ; 56. अल्-वली (मदद और हिमायत करने वाला) ; 57. अल्-हमीद (प्रशंसनीय) ; 58. अल्-मुहसी (गणना करने वाला) ; 59. अल्-मुब्दी (पहली बार पैदा करने वाला) ; 60. अल्-मुईद (दोबारा पैदा करने वाला ; 61. अल्-मुहयी (जीवित करने वाला) ; 62. अल्-मुमीत (मृत्यु देने वाला) ; 63. अल्-हैय्य (सदैव जीवित रहने वाला) ; 64. अल्-क़ैय्यूम (सबको क़ायम रखने और सँभालने वाला) ; 65. अल्-वाजिद (हर वस्तु को पाने वाला) ; 66. अल्-माजिद (आदरणीय) ; 67. अल्-वाहिदुल अहद (एक अकेला) ; 68. अस्-समद (जिसकी कोई इच्छा न हो) ; 69. अल्-क़ादिर (सबसे शक्तिमान) ; 70. अल्-मुक़्तदिर (कुदरत वाला) ; 71. अल्-मुक़द्दिम (पहले और आगे करने वाला) ; 72. अल्-मुअख़्ख़िर (पीछे और बाद में रखने वाला) ; 73. अल्-अव्वल (सबसे पहले) ; 74. अल्-आख़िर (सबके बाद) ;

75. अज़्-ज़ाहिर (सामने, ज़ाहिर) ; 76. अल्-बातिन (गुप्त) ; 77. अल्-वाली (काम बनाने वाला) ; 78. अल्-मु-त-आ़ली (सबसे महान व ऊँचा) ; 79. अल्-बर्र (बड़ा अच्छा व्यवहार करने वाला) ; 80. अत्-तव्वाब (क्षमा देने वाला) ; 81. अल्-मुन्तक़िम (बदला लेने वाला) ; 82. अल्-अ़फ़ुव्व (बहुत क्षमा करने वाला) ; 83. अर्-रऊफ़ (बहुत बड़ा दयालु) ; 84. मालिकुल-मुल्क (सम्राटों का सम्राट) ; 85. ज़ुल् जलालि-वल् इकराम (महानता व इनाम देने वाला) ; 86. अल्-मुक़सित (न्याय करने वाला) ; 87. अल्-जामे (सबको इकट्ठा करने वाला) ; 88. अल्-ग़नी (आत्मनिर्भर) ; 89. अल्-मुग़नी (धनी बनाने वाला) ; 90. अल्-माने (रोक देने वाला) ; 91. अज़्ज़ार्र (हानि पहुँचाने वाला) ; 92. अन्-नाफ़े (लाभ देने वाला) ; 93. अन्-नूर (प्रकाशमान) ; 94. अल्-हादी (सीधा रास्ता दिखाने वाला) ; 95. अल्-बदीअ् (अद्वितीय वस्तुओं का आविष्कार करने वाला) ; 96. अल्-बाक़ी (सदैव शेष रहने वाला) ; 97. अल्-वारिस (सबके बाद मौजूद रहने वाला) ; 98. अर्-रशीद (सत्य पथ का मार्गदर्शक) ; 99. अस्-सबुर (बहुत विनम्र) ।

उपरोक्त सभी नाम पवित्र कुरान एवं हदीस के हैं,
जिनको 'अस्मा-ए-हुस्ना' (पवित्र सुन्दर नाम) के नाम से जाना जाता है ।

(25-03-2010)

बुलन्दशहर

50. अल्लाह तू......

अल्लाह[1] तू, अल्लाह तू,
अल्लाह तू, अल्लाह तू ।

अव्वल[2] भी तू, आखिर[3] भी तू,
बातिन[4] भी तू, जाहिर[5] भी तू ।

अल्लाह तू, अल्लाह तू,
अल्लाह तू, अल्लाह तू ।

फ़ातिर[6] भी तू, नासिर[7] भी तू,
गाफिर[8] भी तू, शाकिर[9] भी तू ।

अल्लाह तू, अल्लाह तू,
अल्लाह तू, अल्लाह तू ।

आदिल[10] भी तू, आमिल[11] भी तू,
मालिक[12] भी तू, गालिब[13] भी तू ।

अल्लाह तू, अल्लाह तू,
अल्लाह तू, अल्लाह तू ।

वाज़िद[14] भी तू, माज़िद[15] भी तू,
हाफ़िज़[16] भी तू, हामिद[17] भी दू ।

अल्लाह तू, अल्लाह तू,
अल्लाह तू, अल्लाह तू ।

मुहसी[18] भी तू, मुहैमिन[19] भी तू,
मुअ्ती[20] भी तू, मुन-इम[21] भी तू ।

अल्लाह तू, अल्लाह तू,
अल्लाह तू, अल्लाह तू ।

1. परमेश्वर, परमात्मा ; 2. सबसे पहले का ; 3. सबसे बाद का ; 4. गुप्त ; 5. जाहिर, सामने ; 6. जन्म देने वाला ; 7. सहायक ; 8. गुनाह बख़्शने वाला ; 9. शुक्रग़ुज़ार ; 10. इन्साफ करने वाला ; 11. अक्लवाला ; 12. स्वामी ; 13. शक्तिशाली ; 14. हर वस्तु को पाने वाला ; 15. आदरणीय ; 16. असली रक्षक ; 17. तारीफ करने वाला ; 18. गणना करने वाला ; 19. चौकसी करने वाला ; 20. देने वाला, अता करने वाला ; 21. नैमतें देने वाला ।

(26-03-2010)
बुलन्दशहर

51. अंजलि में पुष्पों को धरकर.......

अंजलि[1] में पुष्पों[2] को धरकर,
नयनों[3] में अविरल[4] जल[5] भरकर ।
द्वार[6] तुम्हारे सब कुछ तजकर[7],
मैं हूँ प्रभु[8] अब शरण[9] तुम्हारी ।

माधव[10] मोहन[11] कृष्ण[12] मुरारी[13],
माधव मोहन कृष्ण मुरारी ।

मोर मुकुट[14] से सज्जित[15] मस्तक[16],
श्रवणेंद्रिय[17] में स्वर्णिम[18] कुण्डल[19]।
भाल[20] सजाए टीका[21] मृगमद[22],
अधरों[23] पर स्मिति[24] मनोहारी[25] ।

माधव मोहन कृष्ण मुरारी,
माधव मोहन कृष्ण मुरारी ।

माल[26] बैजन्ती[27] शोभित उर[28] पर,
शुभ[29] पीताम्बर[30] श्यामल[31] तन[32] पर ।
कर[33] में कंकण[34], किंकिणी[35] कटि[36] पर,
चक्रसुदर्शन[37] मुरलीधारी[38] ।

माधव मोहन कृष्ण मुरारी,
माधव मोहन कृष्ण मुरारी ।

देवकी[39] सुत[40] वसुदेव[41] के नंदन[42],
नंद[43] प्राण[44] जसुमति[45] आनन्दम्[46] ।
राधा[47] वल्लभ[48] कंस[49] निकंदन[50],
गिरधर[51] नागर[52] कुंजबिहारी[53] ।

माधव मोहन कृष्ण मुरारी,
माधव मोहन कृष्ण मुरारी ।

1. हथेलियों पर बनाया गया गड्ढा 2. फूल, कुसुम, सुमन ; 3. आँखों ; 4. लगातार, निरन्तर ; 5. पानी ; 6. दरवाज़ा ; 7. त्यागना, छोड़ना ; 8. स्वामी, मालिक, ईश्वर, परमात्मा, आदर सूचक संबोधन ; 9. पनाह, रक्षा का भाव, अधीनस्थ व्यक्ति, रक्षित स्थान ; 10. मधु जैसा, शहद के समान, मीठा, मधुनिर्मित, वसन्त ऋतु सम्बन्धी, बसंती, विष्णु भगवान, नारायण, श्रीकृष्ण, इन्द्र, परशुराम, यादवगण, एक राग ; 11. मोह लेने वाला व्यक्ति, जिसके देखकर जी लुभा जाए, एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक सगण और एक जगण होता है, एक प्रकार का तांत्रिक प्रयोग जिससे किसी को बेहोश या मूर्छित करते हैं, प्राचीन काल का एक प्रकार का अस्त्र जिससे शत्रु को मूर्छित किया जाता था, कुंडी, कामदेव के पांच बाणों में से एक का नाम, धतूरे का पौधा, शिव का एक नाम, विष्णु की नौ शक्तियों में एक शक्ति, संभोग, रति, मैथुन, बारह मात्राओं का एक ताल जिसमें सात आघात और सात खाली रहते हैं ; 12. कर्षित सर्व कृष्णः । जो सबको अपनी ओर खींचता है या सबमें भक्ति जगाता है, वह कृष्ण है । 'वेदान्त-रत्न-मंजूषा' में (पृ० 52) में कहा गया है कि कृष्ण का नाम इसलिए है, क्योंकि वह अपने भक्तों के पापों को दूर कर देता है, पापं कर्षयति, निर्मूलयति । 'कृष्ण' शब्द कृष् धातु से बना है, जिसका अर्थ है खुरचना । क्योंकि वह अपने भक्तों के सब पापों को और बुराई के अन्य स्रोतों को खुरच देता है, इसलिए वह कृष्ण कहलाता है । कृष्टे र्विलेख नार्थस्य रूपं भक्तजन पापादिदोष कर्षणात् कृष्णः । गीता पर शंकराचार्य की टीका 6, 34 (भगवद्गीता- डॉ० सर्वपल्लि राधाकृष्णन् पृ० 33, टिप्पणी संख्या-2), विष्णु के दस अवतारों में आठवाँ अवतार । यदुवंशी वसुदेव के पुत्र, जो भोजवंशी देवक की कन्या देवकी के गर्भ से उत्पन्न हुए थे, एक असुर जिसका जिक्र वेदों में आया है और जिसे इन्द्र ने मारा था, एक ऋषि जिन्होंने ऋग्वेद के कई

मंत्रों का प्रकाश किया था, अथर्ववेद के अन्तर्गत एक उपनिषद्, छप्पय छन्द का एक भेद, चार अक्षरों का एक वृत, वेद व्यास, अर्जुन, कोयल, कौवा, कदम का पेड़, मास का पक्ष जिसमें चन्द्रमा का ह्रास हो, अँधेरा पक्ष, कलियुग, शाल्मलि द्वीप के निवासी शूद्र, करौंदा, नील, पीपल, जैनियों के मतानुसार नौ काले वसुदेवों में से एक, बौद्धों के मतानुसार एक राक्षस जो बुद्ध का शत्रु माना जाता है, चन्द्रमा का धब्बा, लोहा, सुरमा ; 13. मुरारि, मुर दैत्य के शत्रु श्रीकृष्ण, मुर को मारने के कारण उनका नाम मुरारि पड़ा ; 14. प्राचीन काल का एक प्रकार का शिरोभूषण जो प्राय: राजा आदि धारण किया करते थे, ताज ; 15. सजा हुआ अलंकृत, तैयार ; 16. माथा, ललाट, सिर ; 17. कान, कर्ण, श्रवण ; 18. सुनहला, सोने का, स्वर्ण का ; 19. बाली, कड़ा, मंडलाकार आकृति ; 20. माथा, ललाट, मस्तक ; 21. माथे का तिलक, भेंट, नज़राना ; 22. कस्तूरी ; 23. ओठों ; 24. मुस्कान, मंदहास्य, मुस्कराहट ; 25. मन हरने वाला सुन्दर ; 26. माला ; 27. वैजयंती, मोतियों की पचरंगी माला, विजयमाल, झंडा, पताका ; 28. छाती, हृदय ; 29. मंगलमय, कल्याणकर, अनुकूल, अच्छा ; 30. पीले रंग का वस्त्र, पीला कपड़ा ; 31. साँवला ; 32. शरीर, देह ; 33. हाथ, किरण, महसूल, टैक्स ; 34. कड़ा, चूड़ा, खड़ुआ ; 35. करधनी, कमरकस, जेहर ; 36. कमर, 37. सुदर्शन (अच्छा, भला, सुन्दर, सरलता से देखा जाने वाला), चक्र (पहिया, वर्तुलाकार वस्तु), विष्णु का आयुध (मत्स्य पुराण के अनुसार सुर्य के असह्य तेज को कम करने के लिए यन्त्र के द्वारा उनका तेज विभक्त किया गया और उस विभक्त तेज से सुदर्शन चक्र, शिव का त्रिशुल और इन्द्र के वज्र का निर्माण किया गया । पद्म पुराण के अनुसार सभी देवों के तेज को मिलाकर शिव ने इस द्वादशारयुक्त सुदर्शन चक्र को बनाया और विष्णु को प्रदान किया ; 38. मुरली धारण करने वाला, श्रीकृष्ण ; 39. वसुदेव की स्त्री और श्रीकृष्ण की माता (जब वसुदेव के साथ इनका विवाह हुआ तब नारद ने आकर मथुरा के राजा कंस से कहा कि मथुरा में तुम्हारी जो चचेरी बहन देवकी है, उसके आठवें गर्भ से एक ऐसा बालक उत्पन्न होगा जो तुम्हारा वध करेगा । कंस ने एक-एक करके देवकी के छह बच्चों को मरवा डाला । जब सातवाँ शिशु गर्भ में आया तब योगमाया ने अपनी शक्ति से उस शिशु को देवकी के गर्भ में आकर्षित करके रोहिणी के गर्भ में कर दिया । आठवें गर्भ के समय देवकी पर कड़ा पहरा बैठाया गया । आठवें महीने में भादों बदी अष्टमी की रात को देवकी के गर्भ से श्रीकृष्ण का जन्म हुआ उसी रात यशोदा के कन्या हुई । वासुदेव रातों रात देवकी के शिशु श्रीकृष्ण को यशोदा को दे आए और यशोदा

की कन्या को लाकर उन्होंने देवकी के पास सुला दिया, कंस ने उस कन्या का वध करने के लिए पटक दिया । कहते हैं कन्या जो योगमाया थी, उसके हाथ से छूटकर आकाश मार्ग से उड़कर विंध्य पर्वत पर आईं, इधर कृष्ण यशोदा के पास बड़े हुए ; 40. पुत्र ; 41. इनके पिता का नाम देवमीढ़ और माता का मारिषा था। इनके जन्म के समय स्वर्ग में दुदुंभि का शब्द सुनाई पड़ा था इससे ये 'आनकदुंदुभी' कहलाते थे । ये अपने पिता के ज्येष्ठ पुत्र थे इनकी बारह स्त्रियाँ थीं- पौरवी, रोहिणी, मदिरा, धरा, वैशाखी, भद्रा, सुनाम्नी, सहदेवा, शांतिदेवा, सुदेवा, देवरक्षिता और देवकी । इन पत्नियों के अतिरिक्त इनकी सुतनु और बड़बा नाम की दो परिचारिकाएँ भी थीं । रोहिणी के गर्भ से बलराम और देवकी के गर्भ से श्रीकृष्ण का जन्म हुआ था । वसुदेव की बहन कुन्ती थी जिससे पाण्डव उत्पन्न हुए थे ; 42. आनंद देने वाला, प्रसन्न करने वाला ; 43. गोकुल के गोपों के मुखिया ; 44. जान, जीवनीशक्ति, साँस, श्वास ; 45. यशोदा, नंद की पत्नी ; 46. उल्लास, खुशी, हर्ष ; 47. राधा (वृषभान गोप एवं कीर्ति की कन्या और श्रीकृष्ण की प्रेयसी-श्रीमद्भागवत में राधा का कोई उल्लेख नहीं है। पर ब्रह्मवैवर्त, देवी भागवत आदि में राधा का वर्णन मिलता है । इन पुराणों में राधा के जन्म और जीवन के सम्बन्ध में भिन्न-भिन्न कथाएँ दी गईं हैं । कहीं लिखा है कि ये श्रीकृष्ण के बाएँ अंग से उत्पन्न हुईं थी और कहीं गोलोकधाम के रासमंडल में इनका जन्म लिखा है । यह भी कहा गया है कि ये जन्म लेते ही पूर्ण वयस्का हो गईं थीं । श्रीकृष्ण के साथ इनका विवाह नहीं हुआ था यद्यपि गर्गसंहिता आदि कुछ इधर के ग्रन्थों में विवाह की कथा भी रख दी गई है । सब जगह श्रीकृष्ण के साथ उनकी मूर्ति और नाम रहता है । इनके नाम के साथ ईश या स्वामीवाचक शब्द लगने से श्रीकृष्ण का बोध होता है), वैशाख की पूर्णिमा, प्रीति, अनुराग, प्रेम, धृतराष्ट्र के सारथी अधिरथ की पत्नी का नाम, जिसने कर्ण को पुत्रवत पाला था । इसी कारण कर्ण का नाम राधेय भी है ; 48. अत्यन्त प्यारा व्यक्ति, नायक पति, स्वामी, अध्यक्ष ; 49. श्रीकृष्ण की माँ देवकी का चचेरा भाई, मथुरा का राजा ; 50. नाश, संहार, 51. वह जो पहाड़ को धारण करे, पहाड़ उठाने वाला व्यक्ति, श्रीकृष्ण ; 52. सभ्य, शिष्ट, चतुर आदमी, नगर में रहने वाला मनुष्य ; 53. वह स्थान जिसके चारों और घनी लताएँ छाईं हों, में विहार करने वाला मनुष्य (श्रीकृष्ण) ।

(29-03-2010)

बुलन्दशहर

53. सत्यम् शिवम् और सुन्दरम्......

सत्यम्[1] शिवम्[2] और सुन्दरम्[3],
नटवर[4], गदाधर[5], माधवम्[6] ।
राधारमण[7], मुरलीधरण[8],
अच्युत[9], अनघ[10] अभिराम[11] रे ।
घनश्याम[12] रे, घनश्याम रे,
घनश्याम रे, घनश्याम रे ।

श्याम[13] कुन्तल[14] गझिन[15] कुंचित[16],
भ्रू[17] विलासी[18] चपल[19] वल्गित[20] ।
फुल्ल[21]-लोचन[22] कमल[23] शारदीय[24],
खिल रहे मध्याह्न[25] रे ।
घनश्याम रे, घनश्याम रे,
घनश्याम रे, घनश्याम रे ।

मोर पंखी[26] मुकुट मस्तक[27],
श्रवण[28] शोभित[29] स्वर्ण[30] कुण्डल[31] ।
मुख[32] मधुर[33] स्मिति[34] मनोहर[35],
शुभ्र[36] द्विज[37] द्युतिमान[38] रे ।
घनश्याम रे, घनश्याम रे,
घनश्याम रे, घनश्याम रे ।

लसित[39] कंकण[40], क्वणित्[41] किंकिणी[42],
पग[43] में नूपुर[44] मन्द[45] मृदु[46] ध्वनि[47] ।
कौस्तुभमणि[48] माल्य[49] उर[50],
पीताम्बर[51] परिधान[52] रे ।
घनश्याम रे, घनश्याम रे,
घनश्याम रे, घनश्याम रे ।

नंदनंदन[53] गोप[54] गिरिधर[55],
प्राण[56] जसुमति[57] अनुज[58] हलधर[59] ।
मदन[60] मोहन[61] हे ब्रजेश्वर[62],
लीलामय[63] अविराम[64] रे ।

घनश्याम रे, घनश्याम रे,
घनश्याम रे, घनश्याम रे ।

1. सच्चा, वास्तविक, निष्कपट, सद्गुण सम्पन्न, खरा ; 2. शुभ, मांगलिक, सौभाग्यशाली, स्वस्थ, प्रसन्न ; 3. प्रिय, मनोज, मनोहर, आकर्षक, यथार्थ ; 4. कुशल एवं प्रवीण व्यक्ति, श्रीकृष्ण ; 5. गदा धारण करने वाला, विष्णु, श्रीकृष्ण ; 6. मधु सम्बन्धी, बसंत ऋतु, श्रीकृष्ण ; 7. राधा से रमण (आनंदोत्पादक क्रिया, विलास, क्रीड़ा, केलि, मैथुन, घूमना) करने वाले, श्रीकृष्ण ; 8. मुरली धारण करने वाले, श्रीकृष्ण ; 9. अटल, स्थिर, परमात्मा, विष्णु उसके अवतारों का नाम ; 10. पवित्र, निरापद, शोकहीन, पुण्य ; 11. अच्छा लगने वाला, मोहक, सुखद, आराम, प्रसन्नता ; 12. बादलों के समान काला, श्रीकृष्ण, श्री रामचन्द्र ; 13. काला, नीला ; 14. सिर के बाल, केश ; 15. घना, सघन ; 16. घुँघराले ; 17. भौंहें ; 18. प्रसन्न करने की क्रिया, सुख भोग की अनुरक्तता ; 19. चंचल, अस्थिर ; 20. घूमता हुआ, नाचता हुआ, नचता हुआ ; 21. विकसित, प्रसन्न ; 22. आँख, नेत्र, नयन ; 23. अरविन्द, उत्पल, पंकज, सरस ; 24. शरद ऋतु सम्बन्धी ; 25. दोपहर ; 26. पंख, पर ; 27. माथा, सिर ; 28. कान, कर्ण ; 29. सजा हुआ, शोभा से युक्त, सुन्दर ; 30. सोना धातु ; 31. बाली ; 32. मुँह ; 33. मीठा, प्रिय और भला, धीमा, मंद ; 34. मंदहास्य, धीमी हँसी ; 35. मन हरने वाला, सुन्दर ; 36. श्वेत, सफेद, उजला, गोरा ; 37. दाँत ; 38. प्रकाश वाला, चमकदार ; 39. क्रीड़ाशील, शोभित ; 40. कड़ा ; 41. झंकृत, ध्वनित, शब्दायमान ; 42. करधनी ; 43. पैर ; 44. घूँघरू ; 45. धीमी ; 46. मीठी ; 47. आवाज़ ; 48. पुराणानुसार एक रत्न जो समुद्र मथने के समय निकला था और जिसे विष्णु (कृष्ण) अपने वक्ष स्थल पर पहने रहते हैं, तंत्र के अनुसार एक प्रकार की मुद्रा, घोड़े की गर्दन के बाल ; 49. माला ; 50. हृदय-सीना ; 51. पीला वस्त्र या कपड़ा, 52. पोशाक, पहनावा ; 53. गोकुल के मुखिया नंद के आनंद अर्थात्

श्रीकृष्ण ; 54. ग्वाला ; 55. पहाड़ को उठाने वाला व्यक्ति, पहाड़ को धारण करने वाला व्यक्ति, श्रीकृष्ण ; 56. जान, श्वास ; 57. यशोदा (जिन्होंने श्रीकृष्ण को पाला था, नंद की पत्नी) ; 58. छोटा भाई ; 59 बलराम ; 60. कामदेव, काम, रतिक्रीड़ा, सम्भोग ; 61. मोह लेने वाला, मोहित करने वाला (मदनमोहन–श्रीकृष्ण का एक नाम); 62. ब्रज के ईश्वर श्रीकृष्ण ; 63. (क्रीड़ा, खेल, खेलवाड़, विलास, विहार, जीवन का कार्यकलाप, अभिनय, रहस्य से भरा कार्य) से युक्त ; 64. बिना रुके, लगातार, निरन्तर, विरामहीन ।

(12–04–2010)

बुलन्दशहर

54. अपूर्वा अपराजिता आनन्द.......

अपूर्वा[1] अपराजिता[2] आनन्दप्रदा[3] राधे[4] नमः[5],
अभीष्टदा[6] आहारदा[7] अभयप्रदा[8] राधे नमः ।
केवला[9] कौषावरी[10] कमलालया[11] राधे नमः,
कृष्णेशी[12] कामेश्वरी[13] कौशला[14] राधे नमः ।
गौरागीं[15] गुणागौण्या[16] गतिप्रदा[17] राधे नमः,
गविवासिनी[18] गतिरनुत्तमा[19] गणतोषिता[20] राधे नमः ।
जितेन्द्रिया[21] जीवा[22] जया[23] जयप्रदा[24] राधे नमः,
जानकी[25] जगदम्बिका[26] जगदन्वया[27] राधे नमः ।
देवमाता[28] दाक्षी[29] दीपप्रिया[30] राधे नमः,
दुर्गा[31] दुर्गतिनाशिनी[32] देवी[33] दया[34] राधे नमः ।
निर्गुणा[35] नारायणी[36] निष्कला[37] राधे नमः,
नरेश्वरी[38] नन्दनागंना[39] निरामया[40] राधे नमः ।
प्राणरूपा[41] पतिव्रता[42] पण्डिता[43] राधे नमः,
पयस्विनी[44] पयोदात्री[45] पवित्रा[46] राधे नमः ।
भुवनमोहिनी[47] भ्रान्ति[48] भयापहा[49] राधे नमः,
भक्तानन्दप्रदायिनी[50] भक्तप्रिया[51] राधे नमः ।
मदनमोहिनी[52] माधवी[53] मंगलप्रदा[54] राधे नमः,
महामोहा[55] माहेयी[56] मुद्रास्या[57] राधे नमः ।
यशस्वनी[58] यामिनीश्वरी[59] युगप्रिया[60] राधे नमः,
योगेशी[61] यति[62] योगिनी[63] योगप्रिया[64] राधे नमः ।
रसिकानन्दा[65] राध्या[66] रतिप्रदा[67] राधे नमः,
रासप्रिया[68] रासेश्वरी[69] रतिश्रेष्ठा[70] राधे नमः ।
वैष्णवी[71] वक्रेश्वरी[72] विद्युतप्रभा[73] राधे नमः,
विमलागीं[74] विमलोदका[75] वेगाढ्या[76] राधे नमः ।

शैरीषी[77] शिशिरा[78] शुभा[79] शीतला[80] राधे नमः,
शुभाङ्गी[81] शशिशेखरा[82] शुचि[83] शैब्या[84] राधे नमः।
श्रीमती[85] श्रुति[86] श्रेष्ठा[87] श्रीहरा[88] राधे नमः,
श्रीशा[89] श्रीस्वरूपिणी[90] श्रीप्रदा[91] राधे नमः ।
सर्वमंगला[92] सारभूता[93] स्थिरा[94] राधे नमः,
सर्वश्वेता[95] सिद्धरूपा[96] सर्वगा[97] राधे नमः ।
हयाकृति[98] हरवल्लभा[99] हरप्रदा[100] राधे नमः,
हरेस्तनू:[101] हरकान्ता[102] हररता[103] राधे नमः।

1. जो पहले न रहा हो, विलक्षणता, अनोखापन, श्रेष्ठता, परमात्मा, परब्रह्म, पाप-पुण्य, मीमांसा के अनुसार अदृष्ट फल ; 2. जो जीती न गई हो, अजेय, दुर्गा, विष्णुकांता ; 3. प्रसन्नता देने वाली, आनन्द देने वाली ; 4. राधा, वृषभानु गोप की कन्या और श्रीकृष्ण की प्रेयसी, प्रीति, अनुराग, प्रेम, वैशाख की पूर्णिमा ; 5. नमन, नमस्कार ; 6. अभिप्रेत देने वाली, चाही हुई वस्तु देने वाली, रुचिकर देने वाली ; 7. भोजन देने वाली, खाना देने वाली ; 8. भय से रक्षा करने वाली, निर्भयता प्रदान करने वाली ; 9. अकेली, एकमात्र, शुद्ध, पवित्र, उत्तम, उत्कृष्ट, श्रेष्ठ, पूर्ण, समस्त ; 10. धन, वैभव, ऐश्वर्य का खज़ाना ; 11. वह जिसका निवास कमल में हो, लक्ष्मी ; 12. श्रीकृण की रानी ; 13. तन्त्र के अनुसार एक भैरवी, कामाख्या की पाँच मूर्तियों में से एक, श्रृंगार एवं विनोद की रानी ; 14. चतुर, निपुण, मंगल ; 15. गोरी, सुन्दरी ; 16. श्रेष्ठ गुणों वाली ; 17. जीवन को गति देने वाली ; 18. ब्रज के गाँव में निवास करने वाली ; 19. गति की स्वामिनी ; 20. सखियों में प्रसन्न रहने वाली ; 21. इन्द्रियों को जीतने वाली, इन्द्रियों को वश में करने वाली ; 22. जीवन, 23. जय दिलाने वाली, पार्वती ; 24. जीत दिलाने वाली ; 25. जनक की पुत्री, सीता ; 26. (जगत्+अम्बिका) दुर्गा, भवानी ; 27. सम्पूर्ण संसार है परिवार जिसका ; 28. देवताओं की माँ ; 29. दक्ष की कन्या ; 30. दीपक को प्यार करने वाली, प्रकाश को प्यार करने वाली ; 31. आदि शक्ति, देवी ; 32. दुर्दशा का नाश करने वाली ; 33. देवता की स्त्री, दुर्गा, दिव्य गुणों वाली ; 34. साक्षात् करुणा या रहम ; 35. सत्, रज और तम इन तीनों गुणों से परे, गुणों से रहित ; 36. भगवान विष्णु की पत्नी, लक्ष्मी ; 37. भाग (हिस्सा) से रहित, कला रहित ; 38. मुनष्यों की स्वामिनी ; 39. आनन्द प्रदान करने वाली ; 40. जिसे रोग न हो ; 41. प्राण स्वरूपा ; 42. पति से अनन्य अनुराग रखने वाली और

यथाविधि पति सेवा करने वाली ; 43. विदुषी ; 44. गाय, दूध देती हुई गाय, बकरी, नदी, जीवंती ; 45. दूध देने वाली ; 46. शुद्ध, निर्मल, साफ ; 47. पूरे संसार को मोहित करने वाली ; 48. भ्रम ; 49. भय को दूर करने वाली ; 50. अपने भक्तों को आनन्द देने वाली ; 51. भक्त के रूप में प्रिय ; 52. कामदेव को भी मोहित करने वाली ; 53. मधुजैसी, प्रसिद्ध लता जिसमें इसी नाम के सुगन्धित फूल लगते हैं ; 54. कल्याण करने वाली ; 55. तीव्र आसक्ति, दुर्गा ; 56. पृथ्वी की स्वामिनी ; 57. भाव भंगिमा ; 58. कीर्तिमती, जिसे यश प्राप्त हो ; 59. जिसका अपने पूरा नियत्रंण हो ; 60. समय को प्रिय ; 61. बहुत बड़ी योगिनी ; 62. वह जिसने इन्द्रियों पर विजय प्राप्त कर ली हो और जो संसार से विरक्त होकर मोक्ष की इच्छा रखती हो ; 63. सन्यासिनी, त्यागिनी, योगिनी ; 64. योग जिसे प्रिय हो ; 65. रस में आनन्द लेने वाली ; 66. आराधना के योग्य ; 67. आनन्द देने वाली ; 68. रास में आनन्द लेने वाली ; 69. रास में श्रेष्ठ ; 70. रति में श्रेष्ठ ; 71. विष्णु की शक्ति, दुर्गा, गंगा, तुलसी, पृथ्वी ; 72. कुटिल व्यक्तियों की स्वामिनी ; 73. बिजली जैसी कान्ति वाली ; 74. निर्मल अंगों वाली ; 75. स्वच्छ जल वाली, अति पवित्र, पुण्य नदी 76. तेज, चपल ; 77. शिरीष पुष्प की तरह मोहक ; 78. शान्त ; 79. शोभा, कान्ति, छवि, प्रकाश ; 80. मधुर भाव भरने वाली ; 81. सुन्दर स्त्री, कामदेव की पत्नी रति, कुबेर की पत्नी का नाम ; 82. शिव की पत्नी, पार्वती ; 83. पवित्र, शुद्ध, स्वच्छ ; 84. भक्ति ; 85. जिसके पास श्री (ऐश्वर्य, धन, सुन्दरता, प्रसिद्धि, आदर) या शोभा हो ; 86. वह पवित्र ज्ञान जो सृष्टि के आदि में ब्रह्मा ने या कुछ महर्षियों द्वारा सुना गया और जिस परम्परा से ऋषि सुनते आए, वेद, निगम ; 87. सर्वोत्तम, उत्कृष्ट, बहुत अच्छा, मुख्य ; 88. अपने सौन्दर्य से मन को हरने वाली, हर (महादेव) की पत्नी पार्वती ; 89. सौन्दर्य की रानी ; 90. श्री स्वरूप वाली ; 91. श्री प्रदान करने वाली ; 92. सब प्रकार का या सबका मंगल करने वाली ; 93. प्रमुख तत्व या सर्वोत्तम रूप ; 94. दृढ़ चित्त वाली ; 95. पूरी तरह से सफेद ; 96. मनोरथ में सफल, प्रयत्न में सफल, अलौकिक लाभ ; 97. सर्वव्यापक, जिसकी गति सब जगह हो ; 98. हयग्रीव (विष्णु के 24 अवतारों में से एक) की पत्नी ; 99. शिव की पत्नी, पार्वती ; 100. भगवान शिव की कृपा प्रदान करने वाली ; 101. हरि की प्रतिरूप ; 102. भगवान शिव की कान्ति ; 103. भगवान शिव के ध्यान में लीन ।

(इस स्तुति में प्रयुक्त शब्द नारद पंचरात्र के पाँचवीं रात्रि के पाँचवें अध्याय के 'श्रीराधासहस्रनाम' से लिये गये हैं ।)

(20-04-2010)

बुलन्दशहर

55. जितचन्द्रा जितसिंहा.......

जितचन्द्रा[1] जितसिहां[2]-रम्भा[3],
पिका[4]-द्विपा[5]-जित-पद्मा[6]-विम्बा[7] ।
शुका[8]-मृगा[9]-जित कामा[10] कामिनी[11],
कीर्तिवल्लभा[12] श्री[13] राधा[14] ।
श्री राधा जय श्री राधा,
श्री राधा जय श्री राधा ।

शुभ्रा[15] शुभा[16] सर्वाङ्गसुन्दरी[17],
भुवनमोहिनी[18] परम्[19] भगवती[20] ।
शिवा[21] सुनन्दा[22] सिद्धयोगिनी[23],
भानुवल्लभा[24] श्री राधा ।
श्री राधा जय श्री राधा,
श्री राधा जय श्री राधा ।

रासवासिनी[25] कृष्णरूपिणी[26],
कृष्णा[27] परमानन्दरूपिणी[28] ।
वृन्दा[29], रासेश्वरी[30], वृन्दावनी[31],
कृष्णवल्लभा[32] श्री राधा ।
श्री राधा जय श्री राधा,
श्री राधा जय श्री राधा ।

जग[33]-जननी[34] जग की कल्याणिनि[35],
अघहरिणी[36] भवसागर[37] तारिणि[38] ।
मधुरा[39], मोदा[40], मंगलदायिनि[41],
भक्तवल्लभा[42] श्री राधा ।
श्री राधा जय श्री राधा,
श्री राधा जय श्री राधा ।

1. मुख के सौन्दर्य से चन्द्रमा को भी परास्त करने वाली ; 2. सूक्ष्म कटि-भाग की कमनीयता से वनराज सिंह के भी मद को चूर्ण करने वाली ; 3. ऊरुओं की स्निग्धता से कदली को भी तिरस्कृत करने वाली ; 4. अपने मधुर कण्ठस्वर से कोयल को भी तिरस्कृत करने वाली ; 5. मंद-मंद गति से गजेन्द्र का भी गर्व खर्व करने वाली ; 6. अपने अनिवर्चनीय रूप लावण्य से लक्ष्मी को भी लज्जित करने वाली ; 7. अपने अधर की अरुणिमा से विम्बफल को भी तिरस्कृत करने वाली ; 8. नुकीली नासिका की शोभा से तोते को भी लजा देने वाली ; 9. चंचल चकित नेत्रों की शोभा से मृग को मात करने वाली ; 10. कामिनी, प्रेम स्वरूपा ; 11. सुन्दर स्त्री, कामवती ; 12. माता कीर्ति की प्रिया ; 13. लक्ष्मी, सरस्वती, ऐश्वर्य, वैभव, यश, कीर्ति चमक, कान्ति, योग्य, शुभ, सन्दर, श्रेष्ठ ; 14. राधा नाम में 'धा' का अर्थ है संसिद्धि (निर्वाण) तथा 'रा' दानवाचक है । जो स्वयं निर्वाण (मोक्ष) प्रदान करने वाली हैं, वे राधा कही गईं हैं । 'रा' रासवाची है 'धा' धारणवाची है और दूर या समीप से हरि का आलिंगन करने से वे राधा कहलाती हैं । (ब्रह्मवैवर्तपुराणम्, अध्याय 17, 226) ; 15. गौरवर्णा ; 16. शुभस्वरूपा ; 17. अनन्त सौन्दर्य की निधि ; 18. सारे संसार को मोहित करने वाली ; 19. अत्यन्त, मुख्य, प्रधान, उत्कृष्ट ; 20. षड्विधि ऐश्वर्य से सम्पन्न ; 21. कल्याण स्वरूपा ; 22. आनन्दयुक्त ; 23. साधिका ; 24. वृषभानु (श्री राधा के पिता) प्रिया ; 25. रास में निवास करने के कारण राधा को 'रासवासिनी कहा जाता है' (ब्रह्मवैवर्तपुराणम्, अध्याय 17, 228) ; 26. लीला पूर्वक कृष्ण रूप धारण कर लेने और सभी अंशों में कृष्ण के समान होने के कारण उन्हें 'कृष्णस्वरूपिणी' कहा जाता है (ब्रह्मवैवर्तपुराणम्, अध्याय 17, 232) ; 27. मोक्ष के अर्थ में 'कृष्' शब्द प्रयुक्त है 'ण' शब्द उत्कृटार्थक है और आकार का अर्थदाता है, अतः उन्हें 'कृष्णा' कहा जाता है (ब्रह्मवैवर्तपुराणम्, अध्याय 17, 235) ; 28. सती राधा स्वयं परमानन्द की मूर्तिमती राशि हैं, इसलिए वेदों ने उन्हें 'परमानन्दस्वरूपिणी' कहा है (ब्रह्मवैवर्तपुराणम्, अध्याय 17, 234) ; 29. सखियों का समुदाय वृन्द कहलाता है और आकार का अर्थ है सत्ता । उनके समूह-की-समूह सखियाँ हैं अतः वृन्दा कहा जाता है (ब्रह्मवैवर्तपुराणम्, अध्याय 17, 237) ; 30. रासेश्वर की पत्नी होने के कारण उन्हें 'रासेश्वरी' कहा जाता है (ब्रह्मवैवर्तपुराणम्, अध्याय 17, 228) ; 31. 'वृन्दावन' उन्हीं का है अतः उन्हें वृन्दावनी कहा गया है अथवा वृन्दावन की अधीश्वरी होने के कारण वे 'वृन्दावनी' कही जाती हैं (ब्रह्मवैवर्तपुराणम्, अध्याय 17, 236) ; 32. श्रीकृष्णप्रिया ; 33. संसार, विश्व ; 34. माता, माँ ; 35. कल्याण करने वाली, मंगल करने वाली ; 36. पाप हरने वाली ; 37. संसार रूपी समुद्र ; 38. तारने वाली, मुक्ति दिलाने वाली ; 39. माधुर्यभाव से युक्त ; 40. हँसी मजाक करने वाली ; 41. कल्याण करने वाली, शुभ देने वाली ; 42. भक्तप्रिया ।

(21-04-2010)
बुलन्दशहर

प्रकाशक एवं मुद्रक :

अखिल पब्लिशर्स एण्ड प्रिन्टर्स

11, प्रथम तल, जिला परिषद् मार्केट, कोर्ट रोड, काला आम,
बुलन्दशहर-203001, उत्तर प्रदेश, भारत.
मोबाइल : +91-9412744467.

मूल्य : रुपये 100/-